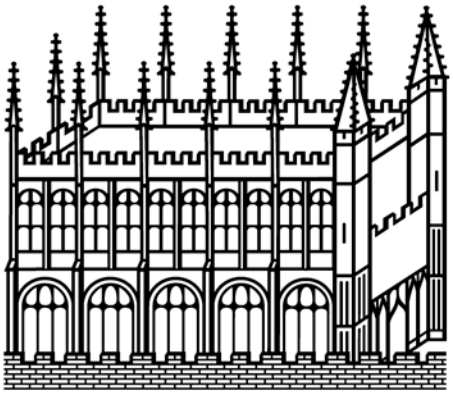


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

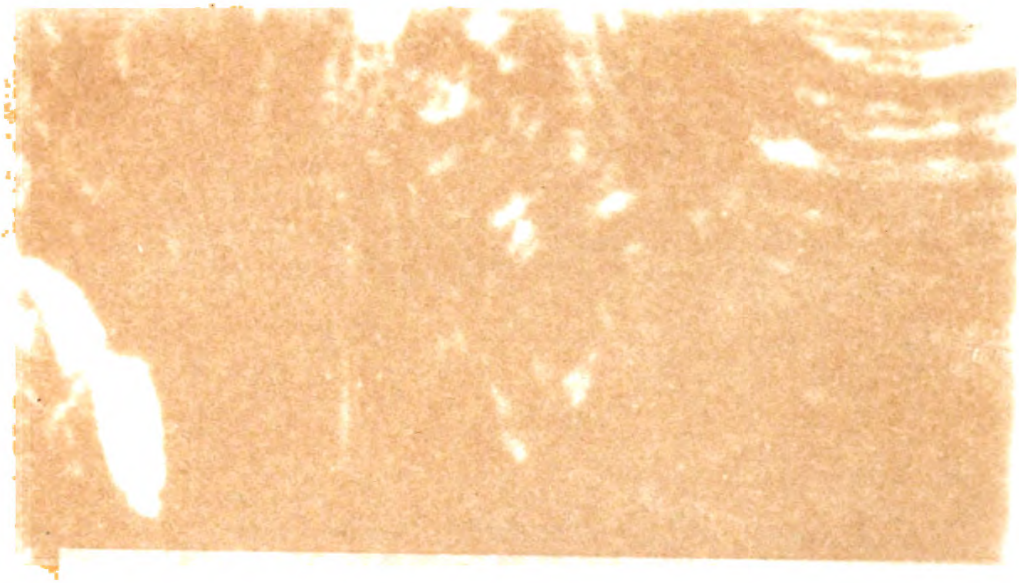
http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.B.43. Hindi gen. 15a

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.





Stiyon kē litopatrikā.

Hitopadesha

स्त्रियोंकी हितोपदेशिका

अर्थात्

हिन्दीमें ख़त पत्र आदि सिखानेकी पुस्तक

जिसे

श्रीयुत विद्या प्रचारक विज्ञाति विज्ञ एम॰ ए॰ डैरेक्टर

आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन

मुल्क अवधकी आज्ञानुसार हिन्दी पढ़ने वालियोंकेलिये

उर्दू मुफ़ीदुन्निसासे

पण्डित शिवनारायण साहिब ज़िलअ लखनऊ के

डिपुटी इन्सपेक्टर ने पण्डित रघुनाथप्रसाद मलाँव के

पाँडे उसी जिलअ के मुदर्रिसकी सलाहसे अवधदेशभाषामें

उल्थाकिया

मतबअ मुन्शी नवलकिशोर में छापी गई॥

माह सितम्बर

सन १८७३ ईसवी

सूची पत्र ॥

पत्र १

विद्यार्थिनी की चिट्ठी शिक्षकाइन जीके नाम अपने अनपढ़ होने का सोच और उनको बुलाना ॥ पृष्ट १ से ४ तक

पत्र २

उत्तर--शिक्षकाइन जीकी ओरसे विद्यार्थिनीके नाम विद्या के लाभ और गुण सीखनेके उपदेश में ॥ पृष्ट ४ से ६ तक

पत्र ३

शिक्षक पत्नीके नाम मूर्खजेठानी और देवरानी को विद्या और गुणके सीखनेकी चाह दिलाने में ॥ पृष्ट ७ से १० तक

पत्र ४

उत्तर--विद्यार्थिनी के नाम ज्ञान और शास्त्रकी रीतिसे स्त्रियोंका पढ़ना पढ़ाना उचित होना ॥ पृष्ट ११ से १३ तक

पत्र ५

चिट्ठी नानीके नाम ख़र्चकी तकलीफ़ और छोटी ननदके बिवाह की तैयारी में ॥ पृष्ट १४ से १६ तक

पत्र ६

नानी की चिट्ठी नवासीके नाम ॥ पृष्ट १७ से १८ तक

पत्र ७

कंन्या की ओर से पिताके नाम ॥ पुस्तक और सुनहरातार और रेशम का मंगाना ॥ पृष्ट २०

पत्र ८

पिताका उत्तर पुस्तक की खोजका ढंग न बैठने और तार रेशम की चाह ॥ पृष्ट २० से २२ तक

पत्र ९

बेटीकी चिट्ठी बापके नाम ॥ हवेली का बन चुकना और दिल्ली का सादाकारीगरहनी गा मांगना ॥ पृष्ट २३ से २४ तक

पत्र १०
पिताकी ओर से कंन्याको ।। पृष्ट १५ से २६ तक
पत्र ११
बेटीकी ओरसे माताको अपनी छोटी बहिन को पाठ शाला में बैठाना और रुपया आदि भेजना ।। पृष्ट २६ से २७ तक
पत्र १२
माताका उत्तर रुपये और जोड़े आदिकी रसीद और गृहस्थी के समाचार ।। पृष्ट २७ से २८ तक
पत्र १३
माताको ओरसे पतिकी आज्ञा मानना और लड़कोंके पढ़वाने का उपदेश और गृहस्थीका कामकाज ।। पृष्ट २८ से ३२ तक
पत्र १४
बेटीकी ओरसे माताको पत्रकी रसीद और अपनी मूर्खता का शोच ।। पृष्ट ३२ से ३३ तक
पत्र १५
पुत्रीका मातासे ख़ैरसल्लाह और कपड़ा ब्योतने की तरकीब पूछना ।। पृष्ट ३३ से ३४ तक
पत्र १६
उत्तर--- माताकी ओरसे मर्दाने कपड़ों की काट ब्योंतकी तरकीब और पत्र न भेजनेका कारण ।। पृष्ट ३४ से ३६ तक
पत्र १७
बड़े भाई की चिट्ठी छोटी बहिनके नाम ।। पृष्ट ३६ से ४१ तक
पत्र १८
छोटी बहिनकी ओरसे बड़े भाईके नाम ।। पृष्ट ४१ से ४२ तक
पत्र १९
बड़े भाई की ओरसे छोटी बहिन के नाम रुमाल की रसीद में ।। पृष्ट ४२ से ४३ तक

पत्र २०

छोटी बहिन का उत्तर ॥ पृष्ट ४४ तक

पत्र २१

छोटे भाई की चिट्ठी बड़ी बहिन के नाम आमके अचार की तरकीब ॥ पृष्ट ४५ से ४६ तक

पत्र २२

उत्तर--बड़ी बहिन की ओरसे नव रतन चटनी और मुरब्बा बनाने की रीति में ॥ पृष्ट ४७ ४८ तक

पत्र २३

फूफू की चिट्ठी भतीजी के नाम ॥ पृष्ट ४८ से ४९ तक

पत्र २४

उत्तर भतीजी की ओर से फूफी को ॥ पृष्ट ५०

पत्र २५

मौसी की ओर से भानजे के नाम घरके काम और ससुरारमें प्रतिष्ठा उत्पन्न करने की रीति ॥ पृष्ट ५१ से ५७ तक

पत्र २६

उत्तर--भानजी की ओर से मौसी को ॥ पृष्ट ५७ से ५८ तक

पत्र २७

भतीजी की चिट्ठी चची के नाम पाठशाला में भरती करने की सलाह में ॥ पृष्ट ५९

पत्र २८

चची का उत्तर भतीजी के नाम ॥ पृष्ट ६० से ६१ तक

पत्र २९

मामी की चिट्ठी भानजीके नाम मूर्ख और लिखने पढ़नेके हेतु में ॥ पृष्ट ६१ से ६३ तक

पत्र ३०

भानजी की चिट्ठी मामी के नाम ॥ पृष्ट ६३ से ६४ तक

पत्र ३१
सास के नाम कुसुम का रंग निकालने और गुलअनार वा नारंगी रंग रंगने की रीति में ॥ पृष्ट ६५ से ६८ तक

पत्र ३२
सास का उत्तर पतोहू के नाम कासनी व पिस्तई व बसन्ती आदि रंग बनाने की तरकीब ॥ पृष्ट ६८ से ७१ तक

पत्र ३३
छोटी ननद की चिट्ठी बड़ी भावज को अपना मासिक मांगना और लिखने पढ़ने का हाल ॥ पृष्ट ७१ से ७३ तक

पत्र ३४
बड़ी भावज का उत्तर छोटी ननद के नाम ख़र्च पहुंचने की तरकीब पृष्ट ७३ से ७५ तक

पत्र ३५
तथा छोटी भावज की ओर से बड़ी ननद को बिवाह में फ़ज़ूल ख़र्च करने में ॥ पृष्ट ७५ से ७७ तक

पत्र ३६
उत्तर--बड़ी ननद की ओर से छोटी भावज के नाम अपने भाई के समझाने के विषय में ॥ पृष्ट ७७ से ८१ तक

पत्र ३७
छोटी भावज की ओर से बड़ी ननद के चरणारविन्द में भून खिचरी बनानेकी रीति में ॥ पृष्ट ८२ से ८३ तक

पत्र ३८
उत्तर---बड़ी ननद के ओर से कोरमा पुलाव यख़नी पुलाव पकाने की तरकीब ॥ पृष्ट ८४ से ८५ तक

पत्र ३९
देवरानी की ओर से जेठानी को ॥ पृष्ट ८५ से ८७ तक

पत्र ४०

जेठानी की ओर से गहने और कपड़े की रसीद और फिरनी पकाने की तरकीब पृष्ट ८७ से ८८ तक

पत्र ४१

दामाद की चिट्ठी सास के नाम दोसौ रुपये की रसीद मांगनी कलिया और तरकारी पकानेकी तरकीब पृष्ट ८९ से ९१ तक

पत्र ४२

सास का उत्तर दोसो रुपयों की रसीद और कोरमा पकाने की तरकीब ॥ पृष्ट ९१ से ९२ तक

पत्र ४३

पुरुष की चिट्ठी स्त्री को अच्छी सलाहके धन्यवाद और अपने शुभ समाचार में ॥ पृष्ट ९३ से ९६ तक

पत्र ४४

स्त्री का उत्तर दो तीन महीने अपने न बुलाये जानेके बाबत । पृष्ट ९७ से ९८ तक

पत्र ४५

साथ पढ़ी हुई और बराबर दर्जेकी स्त्रीके नाम महारानी विद्या धरी के पाठशाला के प्रबन्ध में पृष्ट ९९ से १०२ तक

पत्र ४६

पृष्ट १०३ से १०५ तक

पत्र ४७

बराबर वाले को ॥ पृष्ट १०५ से १०७ तक

पत्र ४८

उत्तर ॥ पृष्ट १०७ से १०८ तक

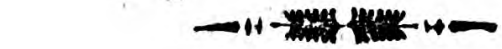
पत्र ४९

तथा चिट्ठी के नभेजने का गिल्ला ॥ पृष्ट १०९ से ११० तक

पत्र ५०
उत्तर--पत्री न भेजने का बहाना और किताब और ओढ़नी की रसीद ॥ पृष्ट ११० से ११२ तक
पत्र ५१
जवाब घर की गृहस्थी में ॥ पृष्ट ११३ से ११५ तक
पत्र ५२
उत्तर--धन्य बाद और बन्दोबस्त घरके बन्दो बस्तके बाबत ॥
पृष्ट ११६ से ११८ तक
पत्र ५३
मालकिन की चिट्ठी प्रतिष्ठिनीय बड़े नौकरके नाम ॥ पृष्ट ११८
पत्र ५४
ऊपर के उत्तर में अर्ज़ी ॥ पृष्ट ११९ से १२० तक
पत्र ५५
प्रतिष्ठितानी नौकर के नाम ॥ पृष्ट १२० से १२१ तक
पत्र ५६
अर्ज़ी जवाबी पत्र ॥ पृष्ट १२१ में १२२ तक
५७ पत्र
छोटे नौकर के नाम ॥ पृष्ट १२३
५८ पत्र
उत्तर--अर्ज़ी ॥ पृष्ट १२३ से १२४ तक

इति

स्त्रियों की हितो पत्रिका



पत्र १

बिद्यार्थिनी की चिट्ठी शिक्षकाइन जीके नाम अपने अनपढ़ होने का सोच और उनको बुलाना ॥

सिद्धि श्री ई शिक्षकाइन जी सर्वो परिलज्जाधिकारिणी को दण्डवत पहुंचे, बिनय के पीछे निवेदन यह है कि मेरा हाल अच्छी तरह से गुजरता है और आपकी तंदुरस्ती वा खुशी हमेशह परमेश्वर से चाहती हूं ॥

महारानी जी मैं अपने शोच का क्या बिनय करूं उन बातों को जो आप कृपा पूर्वक बड़ों की तरह लिखने पढ़ने सीने पिरोने के बाबत कहा करती थीं और मैं दुष्ट नादानी के सबब से ध्यान में न लाती थी और अब ध्यान कर २ आठ २ आसुओं से रोया करती हूं, हाय मैं क्या जानती थी कि भुरिया और दुलिया को पास रखना मेरे हक में ऐसा विष होजायगा कि मुझको दोनों खोक से खोदेगा

अफ़सोस है अगर मैं ऐसा जानती तो उन कम-बखतनियों की सूरत न देखती, एक दिन का हाल सुनिये कि आपकी समधिन अर्थात् मेरी सासने कहा कि कल श्रीयुत साहिब डैरेक्टर बहादुर वा साहिब इन्स्पेक्टर बहादुर मदारिस पश्चिमी यहां के पाठशाला में विराजमान होंगे और तुम्हारे ननदोई के चोग़े में बख़िया करना रहि गया है सो तुम ज़रा उनके चोग़े में बख़िया कर दो मैंने जिन् बुरा भला जैसा मुझ हल्कै को आता था बख़िया करदी, सासजी उस्को देखकर बज़ुत टेढ़ी भवें ज़ुईं और कहने लगी हे बेटी तुम्हारी बड़ी बूढ़ियों ने ऐसाही बख़िया करना सिखाया है ननदजी अपना विष उगलने लगीं वाहरी बिलल्ली पतोह्रू बख़िया क्या है कि सलंगे मारे हैं जेठानी जी बोली कि मैं ननदजी तुम्हारी बलिहारी सच कहना मुलाहिज़ा न करना देखो तो सही इस उजले कपड़े पर मैले सूत के सलंगे रेंगते ज़ुए कीड़े से जान पड़ते हैं, या नहीं वह बोली कि बहिन दुलारी बेटियां ऐसीही फुहर होती हैं जैसी ये हैं, शिल्पकानी जी उस समय का अपना हाल मैं आपसे क्या बिनय करूं मारे

लाज के देह में रक्त सूख गया लेकिन लाचार हर एक की बातें सुनती थी और अपने बुरे प्रारब्ध और फूहरपन पर रोती थी किसी को कुछ उत्तर न दे सक्ती थी हर एक का मुंह देखकर रह जाती थी जीव बड़े दुख में था ॥

अब और सुनिए आपके दामाद ने पचास रु० तनख़ाह के लाकर मुझे दिये परसों एक माह पीछे हिसाब पूछा, विपति पर विपति पड़ी कि फुटकर ख़र्च का हिसाब इतने दिन तक किसको कण्ठ रह सक्ता है उस समय चालीस रुपियों का हिसाब कौड़ियों पर कर समझा दिया बाक़ी दश रुपये का हाल जो सब याद न था वह बता न सकी तो उनको इस पर शंका हुई कि शायद यह रु० घरके ख़र्च में न आए हों सास ननदें तो प्रथमही से दुश्मन थीं यह अच्छी घात उनके हाथ लगी, बोलीं कि आज पांचवां दिन है कि रुकिया टहलुई इनके मैके से आयी थी क्या कौन बड़ी बात है जो उन्होंने वे रुपये अपने नहियर को भिजवा दिये हों इस वास्ते मेरी तरफ़ से उनके मन में बे सबब क्रोध और डाह होगया परसों से न चूल्हे आग है न

गगरी में पानी बेसबब बैठे बैठाये नाराज़ी का ढंग जम गया बिलक्षी बहू तो प्रथमही उपनाम मिला था बे एतिबार बहू अब मिला शिक्षकानी कहां तक अपने दुखकी कहानी से आपका मन शोचमें डालूं ॥

अब चेरी का बिनय यह है कि कुछ दिनोंके वास्ते आप यहां विराज मान होकर जरूरी सीना पिरोना हिसाब किताब सिखा देवें जिस्में आपकी कृपा से सास ननदों के ताने तिश्ने और गोदना गोदने से जीव बचे और आपके दामाद के मनमें मेरी जगह हो और सचाई उत्पन्न हो सिवाय दण्डवत् के क्या बिनय करूं ॥

पत्र २

उत्तर—शिक्षकाइनिजी की ओर से

विद्यार्थिनी के नाम विद्याके लाभ और गुण सीखने के उपदेश में ॥

स्वस्ति श्री नेक प्रकाश कुलवन्ती राधा को आशीष पहुंचे ईश्वर की कृपासे मैं अच्छी तरह पर हूं और तुम्हारी भलाई खुशी चाहती हूं ॥

पत्र तुम्हारा आया हाल जाना तुम्हारा दुख सुन

कर कलेजे में एक बरछीसी लगी मैं सब दिन तुमको समझाती रही कि ऐ भागमान बेटी सीना परोना लिखना पढ़ना जरूरी हिसाब किताब सीख लो तुम्हारे काम आवेगा बलाय लुं धनवान होय। कंगाल किसी की पुत्री सदा माता पिता के घर नहीं रहती विवाह होने के पीछे पराये घर की होजाती हैं घरबार का सारा बोझ उस पर पड़ जाता है गैरों के साथ जिन्दगी काटनी होती है देखो माता पिता प्रीति के सबब से छोटी छोटी बातों को टाल देते हैं परंतु और लोग काहे को टालेंगे उनको तो कामही पियारा है न कि चाम, वे तो थोड़ीसी बात को झगड़े पर चढ़ादेंगे मेरी प्राण अभी तक ख़ैर है अब भी भुरिया दुलिया का सुहाग दूर करदो नहीं तो इनके साथ में तुम्हारा सब लिखना पढ़ना मिट्टी होजायगा परंतु अफ़सोस है कि तुम मूर्खता के कारण मेरे उपदेशों को ध्यान न करती थी अब अन्त को वही बातें तुम्हारे आगे आईं जिनका मुझे डर था ससुरालवालों की आंख से गिरगई लाख रुपये की प्रतिष्ठा भी धूर में मिल गई माता पिता की हंसी कराई अपने साथ उनका नाम धराया सुनो बेटी अगर

तुममें सीने पिरोने का ढंग होता तो बेशऊर बहू क्यों कहो जाती अगर हिसाब किताब में तुमको शक्ति होती तो अपने पतिको हिसाब समझा देती तो बेएतबार बहू क्यों उपनाम पाती बे कार अपने पति से बिगाड़ क्यों होती माता पिता बे दोष तुम्हारे साथ क्यों रांदे जाते गेहूं के साथ घुन क्यों पिसता पर अब तक तो तुम्हारे बदौलत जो २ उनके कर्म्म में लिखाया सो पूरा हुआ परंतु धन्यवाद की जगह है अब भी तुमको सुधि हुई और आंखें खुलीं और बातों की ग़ैरत आई जो मुझको बुलाया जब कि सबेरे का भूला सांझ तक आवे तो उसे भूला न कहिए ॥

मेरी जान यद्यपि राज रानी बहू तो बड़ा मान करती हैं और एक दण्ड भी नहीं छोड़ती परंतु तुम्हारे माता पिता के आगेकी अहसान मेरे हृदय में जमे हैं सिवाय इसके तुम्हारी बड़ीप्रीति है तुम्हारे ऊपर दुःख सुन कर मेरा जी कुढ़ता है ईश्वर ने चाहा तो आठ दश दिन में राज रानी बहू भागवत गीता समाप्त करलेंगी और उनसे मासिक भी मिल जायगा जिस तरह से बनेगा तुम्हारे पास चली आऊंगी तुम लिखने पढ़ने और जाली कसीदे

सीने पिरोने में मन लगाओ तौ वर्ष छः महीने में तुम्हारे पास रह कर रोज के कारवार लायक़ सिखा पढ़ा दूंगी ॥

—o—

पत्र ३

शिक्षक पत्नी के नाम ॥

मूर्ख जेठानी और देवरानी को विद्या और गुण के सीखनेकी चाह दिलाने में ॥

सिद्धि श्री ६ शिक्षक पत्नी महात्मीय सरस्वती स्वरूपा को मेरी दण्डवत चरणारविन्द की धूर को नेत्रका सुरमा बना कर विनय यह है कि इन दिनों मेरे परोस एक पढ़ी लिखी लड़की ब्याह आई है यहां सुसराल में उस्की जेठानी और देवरानी ऐसी मूर्ख हैं कि काले अक्षर भैंस बराबर जानती हैं परंतु परमेश्वर की कृपा से उस्को जो दो चार अक्षर आते हैं और इस सबब से सास ससुर के पास उस्की थोड़ी बहुत कुछ प्रतिष्ठा है इस हेतु से उस्के ऊपर बड़ा जलापा और डाह रहता है इस वास्ते जब तब उस बिचारी से बैरभाव रखती हैं और कहा करती हैं कि सुनो बहिन स्त्रियों का पढ़ना पढ़ाना न शास्त्र से दुरस्त है न हमारे देश

की चाल है इंगलिस्तान आदि राज्यों में प्रचलित होती वहां की चाल चलन से हमको क्या मतलब है श्रीयुत मेरी जब तब तो इस श्लोक के अनुसार (मौनेनकलहोनास्ति) अर्थात् चुप से झगड़े बैठते हैं मैं उनको उत्तर तो नहीं देती परंतु जब सुनते सुनते हृदय पक गया तो एक दिन कह चलीं कि स्त्रियों का पढ़ना न किसी पुस्तक में बुरा लिखा न किसी पण्डित और विद्वान ने स्त्रियों को मूर्ख रखने के वास्ते कहा है रहा देश की चाल दीदी जी मेरा अपराध क्षमा हो बड़े घरों के कुटुम्ब में लिखना पढ़ना सब दिन से चला आता है हां छोटे जाति में जिनके चालका एतिबार नहीं है ऐसा न होता हो यद्यपि पढ़ी लिखी स्त्रियों को केवल श्रीयुत विक्टोरिया महारानी की अच्छी २ बातें और उत्तम स्वभाव बताना बहुत था इसवास्ते कि श्रीयुत महारानी कुल पृथ्वी के छठे भाग और सारे जगत के पांचवें हिस्से रिआया की मालिक और आज्ञा देने वाली हैं और देखो कि कितनी दूर २ उनके मुल्क हैं और कैसे कैसे मत के लोग उनकी प्रजा हैं परंतु इस लिखने पढ़ने के सबब से देश और द्रव्य का बन्दोबस्त किसढंग और ग्रजर

से करती हैं कि आदमी बनों में सोना उछालते फिरते हैं परंतु आपकी हठ धर्म्मी और मूर्खता के कारण ऐसी प्रबन्धाधिकारिणी का हाल छोड़ कर आपही के देश की पढ़ी लिखी स्त्रियों के नाम आपको बतलाती हूं जिन्हें आपको निश्चय होजाय कि इस देश में भी स्त्रियों का पढ़ाना शास्त्र और देश की रीति से प्रसिद्ध और अवश्य है, सुनो बहिन हिंदुओं के यहां बड़े घरों में स्त्रियों का पढ़ाना धर्म्मशास्त्र और देशाचार के अनुसार अच्छा न होता तो श्रीरुक्मिणी जी का पढ़ी हुई होना भागवत से कैसे साबित होता है, जानकी जी का पढ़ी हुई होना रामायणसे प्रसिद्ध है, द्रौपदी का वेदांत में प्रबल होना पोथी भक्तमाल में लिखा है, लीलावती राजाभोजकी रानी का विद्या में निपुण होना उनकी बनाई हुई पुस्तकों से ज्ञात है और इसी तरह हाल में मीराबाई और चन्दर सखी की बुद्धिमानी और कविताई उनकी बनाई हुई पुस्तकों से ज्ञात है अब मुसल्मानों में देखो स्त्रियों का पढ़ना उनकी शरह और देशचाल में न होता तो औरंगजेब सा कट्टर मुसल्मान अपने शास्त्र पर चलने वाला और बुद्धिमान बाद-

शाह अपनी कन्या जेबुन्निसा बेग़मको क्यों पढ़ाता और ख़ाजा आयाज़सी बुद्धिमान और दूरंदेश अपनी कन्या नूरजहां बेग़म के पढ़ाने लिखाने में क्यों बन्दोबस्त करता इनके सिवाय ज़ोहरा बेगम, रज़ीया बेगम, क़न्दहारी बेगम, गुन्ना बेगम, इस समय में सिकन्दर बेगम, आदि ऐसे अच्छे कुटुम की स्त्रियां लिख पढ़ कर विद्वान हुईं और वर्त्तमान हैं जिन्होंने गद्दी बैठ बड़े २ देश और प्रदेशों का राज्य प्रबन्ध किया सिवाय इनके और भी बहुतसी स्त्रियां इस लिखने पढ़ने के बदौलत सदा जीती हैं और जो लिखूं तो बड़ा ग्रंथ बनजाय क्यों बहनि इस हाल में स्त्रियों का पढ़ना लिखना धर्म शास्त्र और देश की रीति से अवश्य है या नहीं परंतु शंका का इलाज तो लुक़मान हकीमके पास भी नहींहै महारानी मेरी जब वह इन दलीलों से क़ायल होगईं तो खिसियानी होकर क्या कहती हैं कि बहनि तुम्हारे तो विद्या और ज्ञान के कारण चार आंखें हैं अगर बहनि हम भी तुम्हारी तरह भागवत और पुराण पढ़ी होतीं तो तुम्हारे शास्त्रार्थ का जवाब देतीं पर हठ से क्या लाभ होता है जहां तुम ऐसी ऐसी पढ़ी

लिखी प्रतिष्ठा और लज्जा से रहोगी हम अपनी चार दिन की अवस्था नकटेपनही से काट लेंगी मल्हारानी जब मैंने उनको इतना मन मलीन पाया तो उलटे हीला बहाना करके मैंने उनका शोच दूर किया ॥

—o—

पत्र ४

उत्तर विद्यार्थिनी के नाम

ज्ञान और शास्त्र की रीति से स्त्रियों का पढ़ना पढ़ाना उचित होना ॥

स्वस्ति श्री सर्व गुण युक्ता लक्ष्मिण को मेरी आशीर्वाद पहुंचे, पत्र तुम्हारा आया दिल को ख़ुशी हुई कि तुमने एक बिचारी बेबस बहू को उसके मूर्ख देवरानी व जेठानी के ताने बाने से बचाया और उनको अच्छे २ शास्त्रार्थों से समझाया ईश्वर ने चाहा तो छुट्टी में इस बातों में एक पुस्तक मैं बनाऊंगी और उसकी नक़ल तुम्हारे पास भेजूंगी इस समय थोड़ा बहुत हर एक स्त्री पुरुष पर विद्या ग्रहण बराबर दरजा उचित होना और स्त्रियोंकी शिक्षा हर देश और हर मतमें प्रचलित होना बहुत से दृष्टांतों से सिद्ध करतीं वे यह हैं ॥

श्लोक ॥

विद्याददातिबिनयम्बिनयाद्यातिपात्रताँ ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोतिधनाद्धर्म्मोबिबर्द्धते ॥

इस श्लोक से साफ़ २ प्रसिद्ध है कि विद्याही से सब दर्जे प्राप्त होते हैं, और विद्याही से सब उत्तमाचरण हासिल होते हैं जैसे इस श्लोक के अनुसार ॥

येनकेनाप्युपायेननरेणशुभमिच्छता ।
त्यक्त्वासर्वम्बिधेयो वै गुणविद्योपसंग्रहः ॥

अर्थात् संसार में विद्या सब पर उचित है याने स्त्री पुरुष दोनों को ॥ बेटा लच्छिमणि कुंवरि यह बात तो प्रसिद्ध है कि विद्या हीन मनुष्य ईश्वर को नहीं पहिचान्ता यही दोहे के अनुसार

दोहा ॥

जो हैं विद्याहीन नर वे नहिं चीन्हे राम ।
ताके दोनों लोक में बुरे होत सब काम ॥

अर्थात्, विद्याहीन के दोनों लोक भ्रष्ट हैं विद्या बिहीन मनुष्य इस चौपाई के अनुसार सुशोभित नहीं होता ॥

चौपाई ॥

विद्याहीन मनुष्य सोहें कैसे । घर भीतर मठोर है जैसे ॥

विदित रहे कि विद्याहीन मनुष्य मट्टी के मठोर के बराबर है अब रवाज का हाल सुनो, हमारी जगत् माता पार्वतीजी कैसी पढ़ीं थीं कि जिन्होंने महादेवजी से कैसे २ प्रश्न किये हैं जो कि पुस्तक रामायण में प्रसिद्ध हैं, लीलावती कालि दास कवि की स्त्री का विद्या में निपुण होना लीलावती पुस्तक से प्रसिद्ध है अधिक कहने की जरूरत नहीं है क्योंकि प्रथम इसका वर्णन होचुका है परंतु कोई दुष्टात्मा मनुष्यों ने अपनी नादानी की राह से बेदलील बुरा ठहरा लिया है, बेटी लक्ष्मणि कुंवरि तुमको ऐसी मूर्खों और नाफ़हमों की बातों का बुरा न मानना चाहिये किन्तु उनकी मूर्खता और कड़ुई बातों को ध्यान में न लाकर अति मिलाप और श्रम से उनको उपदेश करना चाहिये जो वे इस अच्छी राह पर आवेंगी तो खुद विद्या की क़दर और तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगी और अपनी प्रथम के बेढंगेपन को याद करके अफसोस करेंगी॥ आगे आशीस॥

———

५ पत्र

चिट्ठी नानी के नाम

ख़र्च की तकलीफ़ और छोटी ननद के बिवाह की तैयारी में ॥

सिद्धि श्री ६ लक्ष्मी समान पूज्यनीय को दण्डवत पहुंचे विनय के पीछे निवेदन यह है कि जिस्त-रह मैं हूं धन्यवाद के लायक़ है तुम्हारी कुशल क्षेम सब दिन परमेश्वर से चाहती हूं ॥

पत्र तुम्हारा आया तुमने जो अपने प्रीति और प्रेम से मेरा हाल पूछा सो नानीजी परमेश्वर की दया से मुझे अपने जने ब्याहे का शोच न था पर जो झगड़ा आफ़त सास ससुरे पीछे छोड़ गए उसको क्या करूं तुमको मअ़लूम है कि मेरी छोटी ननद बिवाह योग्य होगई है कार्तिक सुदी ५ को १२ बर्ष की पूरी होजायगी सो रात दिन कलेजे में आगसी जला करती है सास जी अपने मरने पर जो कुछ जमा जथा छोड़ गई थीं वह तुमको अच्छी तरह मअ़लूम है आठ महीने से तुम्हारे दामाद भी घर बैठे हैं इधर मेरी बीमारी में रही सही कसर निकल गई अब जो कुछ लटया पुजिया है वह मेरे हाथ गले में है उसमेंभी दोसाल से हाथ लग चुका है कुछ बड़ी नन्द के बिवाह पर नज़र

ज़ुआ और कुछ रोज़ मरें के ख़र्च बर्च में गया अब जो कुछ सौ दोसौ का रहा है वह इस भवानी के कामें जावेगा मुझे नंगे होने का कुछ शोच नहीं है पर बड़ों की किसी तरह इज्ज़त रहे, इन दिनों दो तीन जगह की बात लगी हुई हैं एक जगह घर बड़ा है पर लड़का पढ़ा लिखा नहीं है, दूसरी जगह वाले अपने बराबरों में से हैं और लड़का भी पढ़ा लिखा होशियार नौकर चाकर है पर घर में लोग बहुत हैं और चार पैसे की कमी, तीसरी जगह वाले अपनेसे कुछ हीन नहीं हैं पर धन बहुत है और लड़का छोटा, इनके सिवाय दिल्ली में भी एक जगह बात है वहां वाले न अपने से बड़े न कम लड़के की मा अपनी है और बाप भी छोटा है न चार पैसे के कंगाल हैं न बड़े धनवान लड़का अंगरेज़ी दश वर्ष से पढ़ता है और दो वर्ष में सब से ऊंचा ख़िताब जो अंगरेज़ी पढ़ने वालों को मिलता है सो उसे मिलेगा पर सुश्किल यह है कि दूर बहुत है इन चार जगह में जहां उसके दादा दादी की मरज़ी पटैगी वहां जेठ बैशाख तक अपने घर घाट लगादी जावेगी पर सामान की फ़िक्कि तो अभी से चाहिए तीन चार महीने

पहिले से जो बन्दोबस्त न होगा तो वक्त पर क्या कुछ धरा मिलेगा, शहर में सब चीज महंगी मिलतीहै अगर मामांजी गांवसे दो तीन मन घी, मन डेढ़ मन तेल, तीन चार पंसेरी नमक, छः सात पंसेरी अमचूर, कुछ हल्दी जीरा काली मिरच आदि जरूरी चीजें हिसाब से भेज देवें तो बड़ा काम हो उन्हें समझा दीजिएगा कि घी भैंसका दानेदार सफ़ेद हो, तेल अलसी का जलाने के लायक़ हो, नमक लाहौरी हो रंगमें सफ़ेद और साफ़ शीशे का ऐसा हो अगर लाहौरी न मिले तो नीला रंग लिए हुए अच्छा सांभर मिले तौ वही सही, अमचूर यहां काले खपटे से मिलते हैं वहां से सफ़ेद कली कली भेज देवें हल्दी पुरानी लम्बी २ बड़ी गिरहैं हों रंगत की जर्द हों छोटी जावली न हौं यहां जीरा स्याह होता है वहां अच्छा सफ़ेद नया मिलेगा काली मिरच गोल भारी हों ॥

पत्र ९

नानी की चिट्ठी नवासी के नाम ॥

स्वस्ति श्री स्वधर्म्मयुक्त परम प्रिया रामरानीजी

को आशीष पहुंचे ईश्वर की कृपासे मैं अच्छीत-रह हूं और तुह्मारी सुख और सावधानी सबदिन चाहती हूं ॥

शाबाश बच्चा धन्य २ तुमको है जो तुम्हारे मनमें अपनी छोटी नन्द के बिवाह की बात जमी है भली मानसों की लड़कियों को यही चाहिये कि सास ससुरे का नाम न डुबोवें अपने किये हुए की तो लाज सबको होती है बड़े बूढ़ों की बात रखना बड़ा काम है तुम्हारे नंगे होजानेसे मुझको बड़ा क्लेश है पर यह भी तो इज्ज़तका काम है तुम न करोगी तो क्या कोई ग़ैर आकर उसका बिवाह करेगा परमेश्वर ने तो बोझा तुम्हारे सिर पर डाला अब उठावेगा कौन, तुम्हारी नेक नियती के फलसे परमेश्वर तुम्हारे पति के कमाई में बरकत देगा जिस तरह हाथ गले से भरी हुई पहिले तुम थीं वैसेही फिर होजावोगी अब तुम्हारा गहना और पोशाक यही है कि इसके बिवाह में तुम्हारे बड़े बूढ़ों की लाज रहजाय सो परमेश्वर की दयासे तुम आप बड़ी बुद्धिमान और कुटुम्ब पालक हो तुम्हें समझाने और बताने का कुछ काम नहीं है चार घरों का जो तुमने लिखा उनमें दूसरा और चौथा

घर अच्छा है लड़की का ब्याह ढूंढ़ने में अच्छा वर ही मूल है जिस्को अच्छा वर मिलेगा उसे वही सारा कुल और धन हैं पहिली जगह तुम कहती हो कि आदमी ज्यादह हैं सो यह फिकिर तुम्हारी बेकार है सब अपने २ भाग्य से पाते हैं और जो लड़की अच्छे ढंग से रहेगी तो हरएक छोटे बड़ों की आंख की रोशनी होगी चौथी जगह दूसे भी अच्छा है लड़का भी होनहार है और मा बाप भी बहू के भूखे हैं आगे लड़की के दादा दादी की जो सलाह होगी वही ठीक है ॥ सच है चीज वस्तु का बन्दोबस्त अभी से करना चाहिये ताक पर मुशकिल न पड़ेगी जो जो चीजें तुमने लिखी थीं वह मैंने तुम्हारे मामू से कह दी हैं और सब अच्छी तरह पर समझा दिया है जो घी चिकना होता है और दाने नहीं होते हैं या दही की ऐसी खटास उसमें होती है उसमें मेल होता है, खाने का कडुआ तेल तुमने नहीं लिखा है आठ दस पंसेरी यह भी जरूर है मैंने कह दिया है कि पीला अच्छा तेज बू बास का नया तेल लेकर भिजवा देवें जमाहुआ या गाढ़ा न हो, कटीला लोन मिट्टी के

रंग का सफ़ेद २ अच्छा होता है, पान सुपारी कत्था लवंग वक्त पर तुम्हारे छोटे मामू भेजेंगे और उनके गांवके बाज़ार में अच्छी समूची भारी डलियां विकने आती हैं हम लोगों के यहां मान-कचन्दी दूधिया सफ़ेद सुपारी खाई जाती हैं परन्तु मुसल्मानों के वास्ते थोड़ी जहाज़ी कड़ी सुपारी भी भेजी जावेगी जिस सुपारी की पेंदी में सूराख़ हो तुम छांट कर फेर देना यहां कत्था कानपूर से आता है पर तुम्हारे नाना बलराम-पूर का अच्छा सफ़ेद कत्था भेज देवेंगे छोटी बड़ी इलायची तुम वहीं सआदतगंज से मंगवा लेना छोटी इलायची गोल सफ़ेद और भारी हो पान उन्नाव से अपने बहनोई को लिखकर मंगवा लेना देसावरी पान की पहचान यह है कि गोल चकैया सफ़ेद रंग का हो बंगला बड़ा भारी लम्बा होता है पर खाने में गर्म्म लवंग भूरे रंग के अच्छे फूलदार लम्बे व भारी पड़ेंगे सिवाय इसके और जो कोई चीज़ अवश्य हो सो लिख भेजना ॥

—

पत्र ७

कन्या की ओर से पिता के नाम ॥

पुस्तक और सुनहरातार और रेशम का मंगाना ॥

सिद्ध श्री ६ दोनोंलोक में पूज्याधिकारी पिता जीको मेरी दण्डवत-विनय के पीछे निवेदन यह है कि आपने लखनऊ जाने के समय कहा था कि हम लखनऊ पहुंच कर केनिंगकालेज जावेंगे और श्री युत प्रिंसीपिल साहिबसे जो हमारे बड़े मित्र हैं भेट करेंगे जो कोई नई पुस्तक स्त्रियों के पढ़ाने के लायक़ होगी उनसे लेकर तुम्हारे लिये भेजेंगे परन्तु अब चाहती हूं कि अगर कोई पुस्तक मेरे पढ़ने के लायक़ मिली होते कृपाकीजिये और पांच तोला सुनहरीतार कामदानी बनाने के लिये और पांचतोला पचरंगा रेशम रूमाल सीजनकार के रहे सहे बूटे बनानेके वास्ते कृपा कीजिये आगे दण्डवत ॥

पत्र ८

पिता का उत्तर

पुस्तक की खोजका ढंग न बैठने और तार रेशम की चाह ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीव गुलाब कुंवरि को मेरा आशीर्वाद-चिरंजीव के पीछे ज्ञात हो पत्र तुम्हारा

आया हाल जाना गया तुम्हारे दिलीशौक़ से मुझको बहुत ख़ुशी हुई सच है मैं तुमसे नई बनी हुई किताब के भेजने का वादा कर आया था परंतु क्या कहूं जिस दिन से यहां आया हूं इसक़दर छुट्टी नहीं मिली कि प्रिंसीपिल साहिब से भेंट करता और कमफ़ुरसती का यह सबब है कि श्रीयुत गवरनर जनरल साहब बहादुर मालिक हिन्द यहां पर बिराजमान हैंगे और तीनदिन लाल बारहदरी में इजलास और दरबार गवरनरी होगा इसवास्ते अवध देश के राजा और तालुक़ेदार बड़े २ शान और सामान से लखनऊ में बिराजमान होते जाते हैं मैने सुना है श्रीयुत साहब डैरेक्टर बहादुर मुल्क अवध और साहब इन्सेक्टर बहादुर हलक़ह पूर्वी व पश्चिमी विद्या और हुनर की कारीगरी के नमूने चुन रहे हैं कचहरियों में सर दफ्तर लोग अपना अपना अंगरेज़ी दफ़तर सुधार रहे हैं और मुलाज़िम लोग पुस्तकों का उल्था करने में लगे हुए हैं और बड़े पण्डित और विद्वान भाषा का व्याकरण बना रहे हैं हेड मास्टर साहिब नारमल-स्कूल लखनऊ भाषा की पुस्तक बना रहे हैं

इसी तरह सब हाकिम और अहलकार सरकारी अपनी २ नामवरी में कोशिश कर रहे हैं श्रीयुत पण्डित हरीकिशुन साहिब एक्सट्रा असिसटण्ट कमिश्नर बहादुर लखनऊ ने राजा काशीप्रसाद, महाराजा मानसिंह और महाराजा दिग्विजय सिंह व कुमेटी के और २ मेम्बरों की सलाह से प्रबन्ध में क़ैसरबाग़ की तैयारी और महमानी के दिन रोशनी का बन्दोबस्त मेरे हाथ किया है इस सबब से मुझे इतनी कम फ़ुर्सत है कि तुम्हारी मांगी हुई बात की खोज मैं अच्छी तरह आप नहीं कर सक्ता हूं परमेश्वर ने चाहा तो जब इन कामों से छुट्टी होगी तो उक्त पुस्तक ढूंढ़ कर मिलेगी तो भेज दूंगा अभी पांच तोला तार और इतनाही रेशम भेजता हूं और जोकि हिसाब की विद्या में गणितलता बहुत अच्छा और कारबार में आता है इस वास्ते एक पुस्तक तुम्हारे वास्ते भेजी जाती है तुमको उचित है कि शुरूअ के क़ायदे सीख लो संसार के कामों के लिये इस विद्या का जानना अवश्य है आगे आशीर्वाद ॥

पत्र ९

बेटी की चिट्ठी बाप के नाम ॥

हबेली का बन चुकना और दिल्ली का सादाकारी गरी गहना मांगना ॥

सिद्धि श्री ६ दोनों लोक में पूजनीय पिता जी को मेरी दण्डवत आपकी ख़ैर सलाह से दिल्ली पहुंचना और दरबार में जाना और श्री युत महाराज गवरनर जनरल बहादुर मालिक हिंद के पास से हमेशह के माफ़िक़ खिलत कृपा होना मेरे दिलजमई और आनन्द का कारण हुआ मेरे जीको इसबात से बड़ा आनन्द हुआ कि अबकी दफ़अ श्री भाईजी की भी मुलाक़ात हुई और साहिब सिक्रिटरी महाराज बहादुर ने एक दया पत्री साहिब चीफ़कमिश्नर बहादुर के नाम उन्हें कृपा की महाराज मेरे श्रीयुत चीफ़कमिश्नर बहादुर ने तो सालाना नक़शों में श्रीयुत साहिब डिपुटी कमिश्नर व साहिब कमिश्नर बहादुर की रिपोर्ट में देखकर प्रथम महीने से भाई साहब को एक्सट्रा असिसटण्टी की आसा दी थी अब इस पत्री को देखतेही और बहुत कृपा करेंगे लीजिये अब क्या है अबतो भाई साहब एक्सट्रा-

असिसटण्ट हुये बैठे हैं मुझे इसबात का अलबत्ता सोच रहता है कि भाई साहब कहीं बहिन भानजी का हिस्सह न भूल जावें पिताजी मैंने सुना है कि दिल्ली में सादेकारी का गहना बहुत अच्छा बनता है मुझे आश है कि दश बारह अंगूठियां दो एक जोड़ी नवरत्न और बाजूबंद मेरे वास्ते आप अवश्य लावेंगे दूसरी बिनय यह है कि पूर्व कमरे की दीवारें बन गई हैं बल्कि धन्नियाव भी होगया है अब उनका बिछाना और बडेल का पड़ना बाक़ी रहगया है सो यह सब काम इसी अठवारे में पूरा होजायगा एक और हाल खुशीका बिनय करती हूं वह यह है कि मंझले भाई की बदली उतरोला से उन्नाव को होगई है आजही कलमें वे वहां सिधारेंगे वाक़ी यहां सब अच्छी तरह हैं आप दिलजमई रक्खें और जब तक आप न आवें तब तक अपनी और बड़े भाई की शुभ समाचार लिखते रहो ॥

पत्र १०

स्वस्तिश्री नेचप्रियप्राग कुंवरिको मेरा अशीष, चिरंजीव के पीछे ज्ञात हो कि तुम्हारा पत्र मेरे

पत्र के उत्तर में आया तुम्हारी ख़ुशी का हाल सुनकर मेरे मन को अत्यन्त आनन्द हुआ, कमरे पर धन्नियाव होगया चलो अच्छा हुआ छत के बड़ेल बेलगरी चूना शीरह उर्द का आटा अच्छी तरह मिलाना चाहिये और ख़ूब कूटना चाहिये जितना मसाला और कुटाव होता है छत में उतनीही पुढाई होगी और टपकने चिटकने से बचेगी तुम्हारे मंझले भाई की बदली से मुझको भी अत्यन्त खुशी हुई उतरोला का पानी उनके मुवाफ़िक़ न था अब उन्नाव में ईश्वर की कृपा से आनन्द से रहेंगे इस महीने की पच्चीस तारीख़ को मैं यहां से चलूंगा और तुम्हारी मांगी हुई वस्तु मोल लेकर अपने साथ लेता आऊंगा मेरा यह भी बिचार है कि दो चार दिन आगरे में रहूं अगर ऐसाही ढंग होगा तो तुम्हारे लिये अकबराबादी शतरंजी और दरियाई और रेशमी चारख़ाने के थान उस शहर की सौग़ात लाऊंगा और सुनो तुम्हारे बड़े भाई उस पत्र को पढ़कर बहुत हंसे और कहने लगे देखो पराग कुंवरि भी बड़ी बे सबर है जो मैंने उसकी तनख़ाह नहीं भेजी इसी लिये उसने ऐसा शब्द

लिखा है वह काहे को अन्देशह करती है, पांच रुपिया माहवारी उसके पानदान के ख़र्च के वास्ते जो मैं दिया करता हूं एक साथही भेज दूंगा, मैंने कहा कि भैया जो तुम उसको दिया करते हो महीने २ भेज दिया करो वह जब तक अपना मासिक न पावेगी उसको अन्न न पचेगा हंसकर कहने लगे हां महाराज आप सत्य कहते हैं, अब मैं अपना हज़ार काम छोड़ के सब से पहिले उसको ख़र्च भेज दूंगा आप उस्की दिल जमई कर दें ॥

पत्र ११ ॥

बेटी की ओर से माता को

अपनी छोटी बहिन को पाठशाला में बैठाना और रुपया आदि भेजना ॥

सिद्धि श्री ६ महाराजाधिकारिणी श्री माताजी को दण्डवत के पीछे निवेदन यह है कि आप का कृपापत्र मय मिठाई और मेवा समेत आया बाह २ कृपापत्र क्या था कि मानो कुशल मंगल का थाल था, बेटी पार्वती को पाठशालामें बैठाने से मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ ईश्वर उसको

विद्वान् करे, पांच रुपिया रोकड़ और एक जोड़ा कपड़ा मैं भेजती हूं आप उसको मेरी ओर से दे दीजियेगा और बहुत २ दुलार कीजियेगा चाचाजी का तीन महीने से कोई पत्र नहीं आया मुझको अति शोच है क्योंकि वह मुझको हर महीने अपनी खैर सल्लाह का हाल लिखा करते थे अब नहीं जान पड़ता कि क्या कारण है जो तीन महीने व्यतीत होगये और इस समय में मैं चार विनय पत्र उनके चरणारविन्द में भेज चुकी हूं परंतु एक पत्र का भी उत्तर न आया, अगर वहां कोई पत्र आया हो तो उसके हाल से मुझ को भी ज्ञात कीजिये जिससे शंका दूर हो, रघुनंदन ने तीन महीने की छुट्टी के वास्ते निवेदन किया है ॥

---

१२ पत्र

माता का उत्तर

रुपये और जोड़े आदि की रसीद और गृहस्थी के समाचार ॥

स्वस्तिश्री प्राण प्रिय जानकी प्रकाश बेटी जानकी को अशीष चिरंजीवि के पीछे ज्ञात होकि जोड़ा और रुपये जो तुमने भेजे सो पार्वती को

दे दिये उसने वह जोड़ा आनन्द से पहिना और हर एक को पैलगी करती और कपड़े और नक़द दिखाती फिरी ॥ और हां पुची अच्छी सुधि हुई तुमने मेरी मोहनी का हाल कुछ भी न लिखा ईश्वर की कृपा से अबतो वह बातें करने लगी होगी और अपने छोटे २ हाथों से पैलगी करती होगी और क्षेम कुशल पूंछती होगी, भैया रघु-नन्दन को छुट्टी मिल गई मेरा मन अत्यन्त आनन्द हुआ ईश्वर उसको यह बिबाह फल दायक हो और पुची के दहेज से भी हलके होंं ॥ मेरीप्राण तुम्हारे चाचाजी का कोई पत्र नहीं आया परंतु बैजनाथ परसों आए हैं उनके कहने से जाना गया वह आनन्द से हैं बहुत सा काम अब उनके आधीन होगया है और इसके सिवाय दौरे में मालिक के पास रहना पड़ता है इस कारण उनको छुट्टी अत्यन्त थोड़ी रहती है ॥ पुची मैंने सुना था कि प्राणनाथ कलकत्ते गए हैं परंतु यह नहीं जाना गया कि वहां उनकी नौकरी की भी कोई राह निकली या नहीं ॥ क्यों भैया रामचरण तुम्हारे निकट क्या मैं इस लायक़ नहीं हूं कि जो तुम मुझको अपने हाथ से प्रणाम

लिखते या अलग चिट्ठी लिखते तुमको लाज नहीं आती कि तुम्हारी छोटी बहन तो अपने हाथ से पैलगी लिखे और तुम अपने हाथ से न लिखो आगे चिरंजीवि ॥

---

१३ पत्र

माता की ओर से पति की आज्ञा मानना और लड़कों के पढ़वाने का उपदेश और गृहस्थी का कामकाज ॥

स्वस्त्यो नेच प्रिय किशोरी जी को मेरी आशीर्वाद चिरंजीव के पीछे ज्ञात हो कि बाहर २ आना सुना कि तुमसे और तुम्हारे पति से मिलाप नहीं रहता और कारण न मिलाप का यह सुना जाता है कि तुम उनकी जान में घर के काम में मेहनत नहीं करती हो न लड़कों की तदबीर और विद्या में सुधित और ध्यान धरती हो अगर ये बातें सत्य हैं तो मेरी बच्ची यह बात अच्छी नहीं, जरा सोचना समझना चाहिये पुरुष तो अपने २ सुभीते के माफ़िक तो काश्तकारी व्यापार चाकरी मजदूरी और परिश्रम करके किस २ परिश्रम और दुखसे रुपया कमा करलाते और घर में स्त्रियों को सौंप देते हैं, अगर स्त्रियां

बेढंगी से ख़र्च करें तो यह कहो कि उनको कितना नागवार और बुरा लगेगा क्या तुम इस बातको नहीं जानती हो कि जिस स्त्री को गृहस्थी का कुछ ढंग नहीं होता है उसके घरमें कुछ भी प्रफुल्लता नहीं होती है, पति चाहे कितनाही कमाकर लावे परंतु स्त्री की बेशऊरी से घर में कुछ भी बरक्कत नहीं होती मेरी प्राण यह बात कभी न समझना कि पुरुष को ईश्वर ने कमाने के वास्ते बनाया है और स्त्रियों को बेफ़िकर पलंग पर बैठ खाने के वास्ते उत्पन्न किया है इसतरह के बिचार से स्त्रियां बहुधा आलसी होजाती हैं जिसके कारण से घर तबाह और चीज़ बस्तु मिट्टी होजाती है मेरी प्यारी पुची जब तक स्त्री घरके काम में मन न लगावे भला कहीं अकेले पतिके सभाले सभल सक्ता है, अकेला चना कहीं भाड़ फोड़ सक्ता है तुमको उचित है जिस तरह तुम्हारे पति रुपया उत्पन्न करने में श्रम और बन्दोबस्त करते हैं तुम घरके कारबार में मेहनत करती रहो जिसमें तुम्हारे घरकी शोभा बनी रहे, मेरी प्राण थोड़ा ध्यान करो अगर तुम पढ़ी होती तो अपने बच्चों को पहले इससे कि वह पाठ

शाला जाने के लायक़ होते थोड़ीही अवस्था में उठते बैठते बातों बातों में इस तरह पढ़ा देती कि और लोग बर्षों में न पढ़ा सक्ते सुनो मेरी प्यारी हरी डाल और बच्चों का एक हाल है जिस तरह पेड़ की हरी डाल को जिस ओर झुकाते हैं झुकजाती है इसी तरह बच्चों को जिस मार्ग पर लेजाओ उसी मार्ग में चल निकलते हैं और हां यहभी ध्यान रहे कि बच्चों का बनाव बिगाड़ बहुधा उनके माता पिता के आधीन है जिसबात की चर्चा अपने २ घरमें देखते हैं वही ढंग आप भी पकड़लेते हैं अगर अपने घरमें लिखना पढ़ना अदब क़ायदा मेल मिलाप अच्छी जगह उठने बैठने का सलीका मीठे बोल और इसी तरह के अच्छे ढंग देखते हैं तो उनकी जड़ दुरुस्त और उन्ही अच्छी आदतों का स्वभाव होजाता है और जो आखें खोलतेही घरमें पतंग उड़ाना जुआ लड़ाई भिड़ाई हल्ला गुल्ला आदि बुरे ढंग देखते हैं तो उनके उठान बिगड़ जाते हैं मेरे इस कहने से तुमको ज्ञात हुआहोगा कि बच्चों की जड़ दुरुस्त होने के लिये घर बार का ढंग माता पिताका स्वभाव अच्छा होना उनकेवास्ते

बहुत अच्छा और कार आमद है मुझको निश्चय है कि सुपूतों के माफिक तुम मेरे इन उपदेशों पर जो मैंने तुमको कोख डाह से तुम्हारे भलाई के वास्ते बड़ो की रीति लिखी है ध्यान करोगी, आगे चिरंजीव ॥

---

१४ पत्र ॥

बेटी की ओर से माता को

पत्र की रसीद और अपनी मूर्खता का शोच ॥

सिद्धिश्री ई प्रतिष्ठिनीय माता को मेरी दण्डवत प्रणाम के पीछे बिनय यह है कि आपका पत्र आया मुझको छतार्थ किया सच तो यह है कि आपके उपदेश रत्नों से जोखने के लायक हैं मैं सिर आंखों से उन पर चलुंगी माता जी आप समझें तो क्या कुछ मेरे बैरियों की बुद्धि पलट गई है जो किसी काम में बेमतलब बखाना करूं या खुफकान होगया है जो रुपया बरबाद करूं, हां यह बात तो है कि घरका हर दिनका खर्च मुझको कण्ठ नहीं रहता है और अन पढ़ होने के सबब न लिख पढ़ सक्ती हूं जो ठीक २ समझा दिया करूं बाक़ी रहा लड़कों का पढ़ाना

और ढंग सिखाना उन्हें मुझे कुछ उज्र नहीं पढ़ाने वालों को रुपये पैसे अच्छी चीज़ वस्तु के देने से कुछ कोताही नहीं करती हूं आपके कहने के अनुसार मैं आप पढ़ी लिखी होती तो उनको प्रथमही से इस अच्छे मार्ग में लेजाती, क्या करूं वेउपाय हूं अपने बुरे प्रारब्ध पर डाढ़ें मार कर रोती हूं और आपके उन अच्छे उपदेशों को जो आप विद्या और गुणके वास्ते कहा करती थी सुधि किया करती हूं-आगे दण्डवत ॥

---

१५ पत्र

पुत्री का माता से खैर सलाह

और कपड़ा ब्योंतने की तरकीब पूछना ॥

सिद्धि श्री ई माता जी पूजनीय को मेरी दण्डवत चरणारबिन्दु पूजने के पीछे निवेदन यह है कि बज़ुत दिनों से आपका कोई छापा पत्र नहीं आया इस वजह से मेरा मन शोच में रहा करता है, बिनय करती हूं कि महीने भरमें कम से कम दो दफ़ा आप कुशल क्षेम लिखती रहो कि हृदय का शोच दूर रहे माताजी मुझको

आपकी कृपा से स्त्रियों के कपड़े ब्यौंतने और सीने तो मुझे आते हैं परन्तु अंगरखा व शलूका आदि मर्दाने कपड़ों के ब्यौंतने में हीन हूं अब आप से प्रार्थना यह है कि चिट्ठीयों के द्वारा इन कपड़ों के सीने पिरोने की तरकीब भी मुझे बतलाइए—आगे दण्डवत ॥

---

१६ पत्र

उत्तर माता की ओर से मर्दाने कपड़ों की काट ब्यौंत की तरकीब

और पत्र न भेजने का कारण ॥

स्वस्ति श्री माता पिताकी दृष्टि प्रकाशक चिरं जीव रहो, पत्र तुम्हारा पहोंचा खुशी हुई बहुत २ बातों से उन दिनों में पत्र नहीं तुमको लिखा अब ईश्वर ने चाहा तो पत्र भेजनेमें देर न हुआ करेगी ॥ बेटी कपड़े की काट ब्यौंतमें इस बात का ध्यान अवश्य है कि कपड़ा ठीक ख़ूबसूरत काटा जाय कहीं शिकन झोल न पड़ने पावें अंगरखे में सात टुकड़े होतेहैं आगा, पीछा, परदा, बग़लें, गिरेवान, बाहें, कली तुम्हारे मैले कई जैसे छोटे देहके आदिमी के लिये अंगरखे के आगे पीछे

का लम्बाव एक गज़ पांचगिरह और कमर बारह या तेरह गिरह इस वास्ते आगे पीछे की चौड़ाई बारह या तेरह गिरह चाहिये और परदे की चौड़ाई तीन गिरह तय्यार रहे और गले से कमर तक याने छः गिरह लम्बाई पर कमर पट्टी रहनी चाहिये और कमर पट्टी से दामन तक छः गिरह की लंबाई है उतनीही लम्बी कली लगाना चाहिये और जो कि अंगरखां में तीन२ दामन और हर एक में दो २ कलियां होती हैं इसलिये छः कलियां कतरनी से काट कर हर दामन में दो २ कलियां लगानी चाहियें और कलियों की नोकें कमर पट्टी से मिली हों और उनकी चौड़ाई दामन के किनारे तक; और जोकि कली की चौड़ाई तीन गिरह तय्यार रहती है इस वास्ते काटने के समय कलियों की चौड़ाई सवातीन गिरह लेना चाहिये और हर एक बांह की लम्बाई बारह गिरह और चौड़ाई छः गिरह और चौबगला साढ़े चार गिरह और अगर गोल बग़ल लगाना हो तो मोढों की छाटन से दोनों बग़लें काटलेना चाहिये और पिछले गिरेबान की चौड़ाई आध गिरह लम्बाई पांच

गिरह जबतक गले छाट से बग़लें और किवाड़ी और छांटसे गिरैबान बनातेहैं; और सुनो बेटी मिरजाई बनाना हो तो आसतीन और गिरैबान और बग़ल का हिसाब अंगरखे के माफिक है रहा आगे पीछे परदे की लम्बाई नव या दश गिरह होना चाहिये अर्थात् गले से कमर तक कली की लम्बाई कमर पट्टी से दामन के किनारे तक मिरजाई में अस्तीन की लम्बाई अंगरखे के आस्तीन के बराबर होती है और मलूके के अस्तीन की लम्बाई छः गिरह होती है; टोपी की लम्बाई सवा पांच गिरह और अर्ज सवा दो गिरह कतरनी से बड़ुत ख़ूब सूरत कतरना चाहिये; यह भी याद रहे कि कपड़े की नाप में शाहजहानी गज चलता है इसे दर्ज़ी का गज भी कहते हैं और ३२ इंच का होता है-आगे अशीस ॥

---

१७ पत्र

बड़े भाई की चिट्ठी छोटी बहिनि के नाम ॥

स्वस्ति श्री सर्वोप्रिय बहिन को मेरा अशीस चिरंजीव के पीछे भावार्थ यह है कि आज रामदयाल के मरने का हाल मैंने सुना पहिले

तो मनुष्यता के स्वभाव से एक घूंसा सा कलेजे में लगा दिल चूर २ होगया परंतु जब अन्त पर ध्यान किया तो ज्ञात हुआ कि यह सब दुःख और शोच बेफ़ायदह और सुफ़्त का ढकोसला है क्यों कि हरएक जीवधारी को मृत्यु का स्वाद चखना है, सिवाय ईश्वर के सबको मरना है कुल इतनाही फ़र्क़ है कि किसी को चार दिन पहिले दूत आन पहुंचे किसी को पीछे जिस तरह पर रामदयाल और भाई बन्धु बेवफ़ा दुनियां को छोड़ गये उसी तरह एक दिन हम भी छोड़ जावेंगे, ईश्वर जो बड़ा बैद्य और बुद्धिमान है लड़के बालों की प्रीति इस लिये दी है जिससे उसके नन्हे २ बच्चे पोषण पा जावें लड़के बाले परमेश्वर की धरोहर हैं और पिता माता उनके रखवार और धरोहर वाले हैं ईश्वर का हर समय अपनी धरोहर को ले लेने का अधिकार है रख वार धरोहर दार को पराई धरोहर को दे देने में क्या झगड़ा बात क़रार है अगर ध्यान करो तो संसार के बे ठिकाने और झुठाई पर हर एक वस्तु से प्रसिद्ध है, और ज्ञात है, देखो कभी जाड़ा है कभी गर्मी है कभी बर्सात है

कभी दिन है कभी रात है कहीं घाम है कहीं छांह है कभी ऋतु पाकर आनन्द से हरे २ पत्ते चमक रहे हैं फूल फूले हुये हैं फल लगे हुये हैं वसंत ऋतु में देखो तो न फूल है न फल हैं वही हरे पेड़ लुंड मुंड खड़े हुये हैं अभी देख रहे हैं कि सूर्य्य चमक रहा है सब पृथ्वी पर घाम है थोड़ी देर के पीछे देख रहे हैं कि बादल घिर आया, आंधी जोर व शोर से आगई पृथ्वी भर में अंधियारी छागई और सुनो कोई इस मतलब से लड़के बालों को पालन करते हैं कि इनसे हमारा और हमारे पिता प्रपिता का नाम चलेगा अगर ध्यान करो तो उनका यह भरोसा बहुत झूठा है क्योंकि हम बीस वर्ष से यहां टिके हैं और सैंकड़ों मनुष्यों से जान पहचान है मगर एक आदमी के बाप का नाम नहीं जानते हैं इसलिये कि, न हमको कभी पूछने की आवश्यकता हुई न उनको बताने की और दादा परदादा का नाम तो उनको भी कभी याद नहीं रहता औरों का क्या कहना है संसार में किसी को लाभ पहुंचाना अलबत्ता याद रहता है जो मनुष्य पुल, कुवां, तालाब, मदर्सा, बीमार

खाना सराय आदि ईश्वर की राह पर बनव देते हैं या अपना धन दान करतेहैं उनका पुण्य अलबत्ता उनके साथ जाता है और संसार में भी कोसों तक अच्छा नाम होता जाता है और कोई मनुष्य इस आश पर बंश की रक्षा करते हैं कि हमारे पीछे हमारी लक्ष्मी बंश के काम आवे और वह इस लक्ष्मी से आप भी आनन्द रहैं और हमारे नाम पर भी खर्च करैं मेरी बहिन यह आश सब व्यर्थ है सोचो तो सही जिस हाल में अपने जीते जी उन्होंने आपही अपने अपने परलोक का सामान ठीक न किया और इतने बड़े मुशकिल काम को पराये आसरे छोड़ दिया तो उनसे अधिक भूला झ्रा और नादान कौन होगा हमने तो बहुधा यही देखा है कि नादान लोग अपने बंश सुखी रहने के लिये अपने ऊपर हजारों दुःख उठा के सूखे टुकड़े चबा२ के मरगये उनके कपूत बंशने उस धन को जो बिन श्रम के हाथ पैर हिलाये बिना मिलगया उसकी कुछ भी क़दर न की थोड़ेही दिनमें अलल्ले तलल्ले गुलछर्रों में उड़ा दिया पिता माता के नाम पर एक कौड़ी भी न खर्च की या दमड़ी के

फल फूल भी उनके श्राद्ध में न लगाया और सुनो यह बात भी सोच और ध्यान के लायक़ है कि ब्रह्मा से आज तक श्लोक के अनुसार ॥

मान्धातासुमहीपतिःकृतयुगेलङ्कारभूतोगतः ।
सेतुर्येनमहोदधौविरचितःक्वासौदशास्यान्तकः ॥
अन्येचापियुधिष्ठिरप्रभृतयोह्यस्यंगताभूपते ।
नैकेनापिसमङ्गताबसुमतीमुंजत्वयायास्यति ॥

सतयुग में भूमिका भूषण बड़ा प्रतापी राजा मान्धाता त्रेता में राम चन्द्र जिन्होंने समुद्र में पुल बांधा और रावण को मारा तथा द्वापर में युधिष्ठिर इत्यादि बज़ुत बड़े २ राजा होगये और मर भी गये कहो अब वे कहां हैं उनमें से किसी के साथ यह पृथ्वी न गई अब ऐसे २ बड़े लोग मृत्यु के हाथ से न बचे तो हम कब छूट सक्ते हैं ॥

चौपाई

सुत बित नारि भवन सुख केरे । उपजे घटा जांय नभ जेसे
कोउ न काहु दुखसुखकर दाता । निज कृतकर्म भोग सब भ्राता

अर्थात् कोई किसी का साथी इस संसार में नहीं है और सिवाय पुण्य और पाप के कुछ मनुष्य के साथ नहीं ॥

मेरी प्यारी बहिन इस दुनियां का ढंग इस

तरह से चला आता है और जबतक ईश्वर की इच्छा है तबतक ऐसाही चला जायगा इस वास्ते ज्ञानवान को चाहिये कि अपने अन्त कर्म्म पर ध्यान रक्खै और अपने परलोक को सोच लिया करे, ईश्वर की इच्छा, पर हर दमराज़ी रहैन किसी के पैदा होने की खुशी करै न मरने का दुख, परोपकार और ईश्वर के स्मरण में लगा रहै और रात दिन यही प्रार्थना करे " हे परमेश्वर अपने बड़ाई के कारण हम पापियों का अन्त भला कर" आगे सबूरी और ईश्वर की बड़ाई के सिवाय क्या लिखा जाय ॥

पत्र १८

सिद्धि श्री ५ भाई साहब को मेरी दण्डवत् प्रणामके पीछे निवेदन यह है, आपका पत्र संसार के झुठाई और न पायदारी और अपने परलोक बनाने के विषय में आया सुभ आधेजीव, दिलबुझी हुई अमृत समान और सुखेन वैद्य की सजीवन मूर होगई मानो जैसे कोई आदिमी किसी डरकी राह में बे होश होगया हो कोई ईश्वर का भक्त उसके मुंहे पर पानी का छीटा देकर जगा दे कह

वे धड़क सोते से चौंक पड़े और दोनों आखें मलता हुआ उठकर झटपट अपनी मार्ग ले और ठगों और डाकुओं से बचकर अपने मंजिल पर पहुंच जावे, मेरा भी ठीक ऐसा ही हाल हुआ उसपत्र के भावार्थ उपदेश के पढ़ने से मेरी आंखें खुलगईं सारी भूल जाती रही वे होशी उड़गई दुखदाई सब बिसर गया संसार के अनेक रूपतों का नक्शा आंखों में खिंचगया भाईजी मेरे सब उपदेश आप के सत्य हैं इस कहावत के अनुसार कैसा सुख कहां का दुख न हमको किसी के दानकी खुशी न किसी के दया पर अहंकार जो हमें कोई कुछ देवे तो उस पर न भूलें जो कोई हम पर कृपा दृष्टि होतो उसका कुछ अहंकार न चाहिये और न किसी के कौल पूरा करनेकी खुशी और न किसीके कठोर ताई से खुशी; आगे ईश्वर की माया है ॥

पत्र १९

बड़े भाई की ओर से छोटी बहिन के नाम

रूमाल फिसीरसीट में ॥

स्वस्ति श्री बहिन को आशीष चिरंजीव के पीछे ज्ञात हो कि तुम्हारे हाथ का काढ़ा हुआ रूमाल

पञ्जंचा हमको तुम्हारा बनाया हुआ यह रूमाल बहुत प्रसन्न आया हाशिये की बेल और हौज की छड़ियां तारीफ़ के लायक़ हैं और तुरंज भी शोभाय मान है परंतु कोनों के बूटे जरा छोटे होगये हैं और छड़ियों के बीच की बूटियां तनिक बड़ी होगई हैं मेरे लिखने से यह प्रयोजन नहीं है कि वह रूमाल मेरे प्रसन्न नहीं आया किन्तु यह एक कारीगरी की बात है हर एक वस्तु का अपने ताल मेल से होना बनाने वाले के तमीज और सलीके की निशानी है उसके बदले में दोथान गुल बदनके तुम्हारे वास्ते भेजे जाते हैं और भी जब कभी अपने हाथ की बनाई हुई कोई वस्तु भेजोगी उसका बदला यहां से भेजा जायगा; हां चोगोशिया टोपी का एक अच्छा छापा मिलगया है जो कि हाल में तुमको हर एक वस्तु के बनाने और काढ़नेका शौक है इस लिये तुम्हारे वास्ते भेजा जाता है इसके बदले में एक टोपी इसी छापे की हमारे वास्ते भी छपवा कर और काढ़ कर भेजदेना ॥

पत्र २०

छोटी बहन का उत्तर ।

सिद्धि श्री ५ उभयलोक में स्वामी भाई साहब को दण्डवत और प्रणाम के पीछे विनय करती हूं कि कृपापत्र मै दो थान गुलबदन और छापा चौगोशिया टोपी के पढ़ुंचे, मैं कृतार्थ हुई भाई साहब छड़ियों की बीच की बूटियां और कोनों के बूटे मुझे भी बेमेल और छोटे बड़े मालुम हुए थे परंतु क्या करूं उसके मेल का छापा न मिला अगर आप कृपा पूर्वक छः सात तरह के छापे ढुंढ़वा और मोल लेके कृपा कीजिये तो एक डुपट्टा काढ़ कर स्त्री युत भावज जीको बनाकर भेजूं अगर मेरे पास सामान ठीक होता और नाम धराई का सोच न होता तो अबतक कब के दो डुपट्टे काढ़कर भेज चुकी होती दूसरी बात यह है कि आप की फ़रमाइश चौगोशिया टोपी के वास्ते महीन सुत की गोलियां मंगवाई हैं ईश्वर ने चाहा तो इसी अठवारे में टोपी काढ़ और सीके आपके चरणारबिन्द में भेजूगी; आगे दण्डवत ॥

पत्र २१

छोटे भाई की चिट्ठी बड़ी बहन के नाम

आम के अचार की तरकीब ।

सिद्धि श्री ५ बहन साहिबह को मेरी दण्डवत प्रणामके पीछे भावार्थ विनय यह है कि बहुत दिनोंसे आपका कृपापत्र नहीं आया मन को बहुत सोच है प्रार्थना यह है कि कृपा पूर्वक अपनी खैर सलाह से दिलजमई फ़रमाते रहो और नौरतन चटनी और सुरब्बा बनाने की युक्ति भी लिख भेजो यद्यपि मैं ने कई युक्तियों से चटनी बनवाई परन्तु जैसी आपके हाथ की बनाई हुई चटनी अच्छे स्वाद की होती है वैसी न बनी परन्तु अचार बनाने की अच्छी २ तरकीबें हाथ लगी हैं औ एक २ अचारी आपको अचार और चासनीदार लोन पानी का अचार भेजतीहूं और जोकि इस तरहं की वस्तुओं का आपको बड़ा शौक़ है इस वास्ते इन अचारोंके बनाने की युक्ति भी लिखातीहूं दिहाजी आंब के अचार के बनाने की यह रीति है कि नई अमियों को जो चुट-हली नहीं इस तरह से छीलते हैं कि हरियाली नहीं रहने पाती है और उनको इस तरह काटते हैं कि दोनों फाकें अलग नहीं होने पाती हैं

फिर बिजुली निकाल करके उसमें लहसन के छीले हुये जवे, लाल मिरच, सोंफ, पुदीना, अदरक, कलौंजी, लोन, मिलाकर भर देते हैं और फांकीका मुंह बन्द करके डोरे से बांध देते हैं आठ दस दिन के बाद घाम दिखाकर अर्क़ नाना या सिरके में छोड़ के एक अठवारा और घाम दिखाकर काम में लाते हैं या सरसोंके तेल में जाली दार आंम चोर के बिजुली की जगह लोन, मसाला जैसा पहिले रीति में है भरके छोंड़ देते हैं तेलके अचार में छिलका छीलने की जरूरत नहीं है चाशनी दार अचार की यह रीति है, आध सेर किश मिश औ छुहारा पाव पाव भर अमचुर और निमक, आध आध पाव, अदरक लहसुन आदि मसालह, तीन सेर अर्क़ नाना में छोड़ के डेढ़ सेर शक्कर डाल कर पन्द्रह दिन तक घाम दिखा कर काम में लाते हैं ॥

पच २२

उत्तर बड़ी बहिनि की ओर से ॥

नवरतन चटनी और मुरब्बा बनाने कीरीति में ॥

स्वस्ति श्री प्राणप्रिय राम नाथ जीव को मेरी

आशीस चिरंजीव के पीछे ज्ञात हो पच तुम्हारा भेजा हुआ लिखी हुई अचारियों समेत आया असल में यह अचार बड़े स्वाद का है उनके बनाने की रीत भी अच्छी जान पड़ी है ईश्वर ने चाहा तो उन्हीं रीतों की तरह अचार मैं भी बनाऊंगी और तुम्हारा हिस्सा भी तुमको भेजूंगी अब तुम्हारे लिखने को तरह चटनी मैं भी बनाने की रीति लिखे भेजती हूं और एक २ चटनी और मुरब्बे की अचारी जो नीचे लिखी हुई तरकीब से बना हुआ है तुम्हारे वास्ते भेजती हूं नवरतन चटनी बनाने की रीति यह है कि आंब का गूदा सेर भर, सिरका या अर्क सवा सेर, लहसुन लाल मिरच आधो २-छटांक, कलौंजी सौंफ सूखा पुदीना दो २ तोला, लौंग जायफ़ल चार २ माषा, अदरक लोन छ-टांक २ भर, शक्कर या गुड़ पाव भर, पहिले आंब के गूदे को सिरके में पिसवा डालो फिर सब मसालों को सिरके में पिसवा कर आंम के गूदे में मिला दो और जितना सिरका रह गया हो उसमें गुड़ और मसाला आंम का गूदा मिलाकर के उबाल दो जब चाशनी बन जाय तब काम में लाओ और अगर रंग बनाया चाहो तो दो तोले

हल्दी भुनी हुई पिसवा कर मिलवा दो मुरब्बा बनाने की यह रीति है कि आंम का छिलका छील डालो कि हरियल का नाम रहने न पावे फिर बिजली निकलवा कर कांटे से गोदवा २ चूनेके पानी में छुड़वाते जाओ फिर पहर २ छः २ घड़ो के पीछे साफ और खाली पानी में डाल दो उसके पीछे खालिस पानीमें उबाल दो जब अधगले होजांय खुश्क करो फिर फांकियों से दूनी शक्कर या क़न्द के जलाव में छुड़वा कर जोश दिलवाओ जब लुआब खूब गाढ़ा होजाय और तार बन्ध जाय तब काममें लाओ; दूसरी बात यह है कि दो तोला नखालिस सोना इसी आदमी के हाथ बालियों के बास्ते भेजती बालियों का नमूना दिखाकर भावज की एक जोड़ी बारी कुन्दन लाल सादे कार से बनवाकर किसीके हाथ भिजवादो; आगे आशीस॥

पत्र २३

फूफूकी चिट्ठी भतीजी के नाम॥

अस्ति श्री नेच बिन्दु रामकुंवरि को आशीस पहुंचे चिरंजीव के पीछे बिज्ञात हो कि ईश्वर की कृपा से यहां अच्छी तरह से आनन्द है और

तुम्हारी तन्दुरस्ती व खुशी चाहती रहती हूं भाभी जी के पत्र से ज्ञात हुआ कि तुम्हारे बैरियों की देह बीमार रहती है यद्यपि दवा दारू किया जाता है परंतु अच्छे होनेका कोई ढंग नहीं है इस हाल के सुनने से मुझ को और तुम्हारी फुफाजी को बड़ा सोच और दुख रहता है, दुख हरण ईश्वर तुमको आराम करे मालूम होता है कि तुम परहेज़ नहीं करती हो या तुम्हारे रोग का इलाज बैद्य नहीं पाता या वहां की हवा तुम्हारे विपरीत है इस वास्ते मेरी यह आज्ञा है कि तुम यहां चली आओ और कुछ दिन मेरे पास रहो यहां पहिले तो तुम्हारे परहेज़ का बन्दोबस्त करूंगी, दूसरे बादशाही अस्पताल के डाक्टर हैं जो अपने समय के धन्वंतर बैद्य हुये हैं तुम्हारे फूफा के बड़े मित्र हैं तुम्हारी दवा करेंगे, तीसरे दवाई नई और अच्छी यहां बहुतसी मिलसक्ती है, चौथे यहां की हवा भी तुम्हारे जी के माफ़िक़ है इन बातों से तुम वहां से चली आना और इलाज करना ईश्वर की कृपा से अच्छा होगा आगे चिरंजीव के सिवा क्या लिखी जाय कुवार वदी ६ सम्वत १९२९ ॥

पत्र २४

उत्तर भतीजो की ओर से फूफी को ॥

सिद्धि श्री ई फूफी जी को मेरी दण्डवत् प्रणाम के पीछे बिनय यह है कि कृपापत्र कुवार वदी ई सम्बत् तथा से मन को खस्थता ज़ई ईश्वर आपको हमारे सिर पर आनन्द रक्खे ॥ फूफी जी पर हेज़ तो सब दिन से मेरे खभाव में पड़ रहा है बीमारी मेंभी वैद्यकी आशय से महीने भर से आध पाव मांस की इखनी पर ब्यतीत करती हूं नाज की जिन्स में से कोई चीज़ किरिया खाने को भी नहीं खाई क्योंकि इस बात को तो मैं आप जानती और समझती हूं कि तोला भर दवा पावभर वे परहेज़ी में क्या फल दे सक्ती है रहा अच्छे वैद्य और अच्छी औषधि का मिलना इस उजाड़ खंड में कहां हो सक्ता है बाक़ी यहां पानी सब दिन से मुझको मुफ़ीद, नहीं मेरा कई दफ़ा मनसुबा ज़ुआ कि आपके चरणारबिन्द में आन कर इलाज की उपाय करूं लेकिन कहारों के न मिलने के कारण वहां न आसकी इस वास्ते चाहती हूं कि जुड़ावन कहार को आज्ञा हो कि छः कहार अजूरह दार जो इसी आदिमी के साथ

जो यह पत्र लिये आता है इसी के साथ भिजवा दीजिये कि चरणारविन्द में पञ्चांग श्री युत की आज्ञा और सलाह के माफ़िक़ अपने रोग के इलाज में तत्पर होऊं आगे प्रणाम ॥

पत्र २५

मौसी की ओर से भानजे के नाम घर के काम और ससुरार में प्रतिष्ठा उत्पन्न करने की रीति ॥

स्वस्ति श्री भाग्यमान राधाजी को मेरी आशीर्वाद प्राप्त हो यहां ईश्वर की कृपा से सब तरह का आनन्द है और तुम्हारा सुख और आनन्द सदा चाहती हूं बेटी कई वर्षों से मेरे मन में यह बात थी कि तुम्हारे बिवाह में शामिल होऊं पर क्या कहूं कि जिन दिनों में तुम्हारा बिवाह होने वाला था दैवयोग यहांतुम्हारे भाई के शत्रुओं की देह ऐसी बीमार हुई थी कि मानों ईश्वर के घर से लौट आए उनको उस दशा में छोड़ कर न आसकी मेरी आसा अभिलाषा मेरे मनही में रही सुनो बेटी संसार में अच्छा नाम बड़ा धन है वह अच्छे आचरण से प्राप्त होता है मैं तुमको सब लड़कों से अधिक प्यार करती हूं और

अपने जी की तरह रखती हूं इसका बड़ा कारण यही है कितुम्हारा आचरण मुझ को बहुत भाता है मैने तुमको और लड़कों की तरह हठ करते, दौड़ कर चलते, खिल खिला कर हंसते, लड़ते, झगड़ते, खेलते कूदते, कभी नहीं देखा जब मैं वहां गई तो तुमको सीते, पिरोते, कामदानी, और रफू बनाते कभी अपने छोटे भाई बहिन को लिखाते पढ़ाते पाया कभी घरको साफ़ सुथरा कराने के बन्दोबस्तमें लगी और सारी वस्तु के सवांरने और सुधारने में पाया कभी रसोई बनाने के बन्दोबस्त व नौकरों के देख भाल में पाया तुम्हारे बन्दोबस्त से ननदजी घर के कामोंसे बेसोच रहा करती थीं और मुझसे कहा करती थीं कि मेरी प्यारी बेटी राधा सारा बोझ घर बार का संभाले रहतीहैं ईश्वर उसको चिरंजी व रक्खे अपनी जिन्दगी का सुख देखे लड़के बालों से दूधों नहाय पूतों फले अपनी मांग कोख से ठंढी रहे मैंतो उसको मेहनत और बुद्धिके कारण निवाड़ के पलंगतोड़ा करतीहूं मेरे प्राण मैंने तुम्हारे माता पिता और सब घरको तुम्हारा अहसानमंद पाया यद्यपि तुम ईश्वर की कृपासे आप बुद्धिमानहो कोई बात बुद्धि से ख़ाली नहीं परन्तु प्रीतिके सबबसे मैंभी

तुमको थोड़े उपदेश लिखती हूं अगर उन पर चलोगी तो ससुराल में भी सब की आंखों की पुतली बनी रहोगी सुनो बेटी राधा सासु ससुरे का पास, जेठ जेठानी बड़े ननदोई व ननद का पास, छोटे ननदोई व ननद और देवर देवरानी का प्यार सब से पहिले जानना; मेल मिलाप पैदा करना; मेरी प्राण लड़ाई झगड़ा तू तू मैं मैं गोहार से सब का जी आफ़त में होजाताहै दुनियां में हंसी होती है और दरिद्री नाम होजाता है मेरी प्यारी भानजी मेल मिलाप अच्छी चीज़ है दुखें देखो बड़ा स्वाद है बिचारे ग़रीब ग़ुरबा दिन भर मेहनत मज़दूरी करके चार छः पैसे कमा लाते हैं रात को दोनों प्राणी लड़के बालों के साथ चूनी भूसी या जो कुछ मिलता है खापी के कैसे खुशी अनन्द से गोड़ फैला के सोते हैं और परस्परके मिलाप और प्रीति से संसारके श्रम व दुख कैसे काटते हैं; बाज़ राजा और बाबू परस्पर की फूट के कारण जिन्दगी कड़ुई और बेस्वाद व्यतीत करते हैं मेरे प्राण जानकी बहू को तुमभी जानती हो कि कैसे कुलवती और द्रव्य वाली थीं उनके घर में परमेश्वर का दिया हुआ क्याकुछ कम था

परन्तु उनकी तरह वह बहमी और दुष्टात्मा कोई स्त्री न हो उमर भर विचारे ठाकुर साहिब का नाकमें दम रहा सब दिन यही सुनने में आता था कि रानी साहिब घरमें और ठाकुर साहिब दरवाज़े पर खुर्री चार पाई पर मुंह औंधाये पड़े हैं चारदिन से चूल्हा नहीं गरम हुआ ठाकुर साहब और रानी साहब को अन्न पानी हराम है लौंड़ियों और खिदमत गारियों कोठों के ताले खोला २ भारी २ जोड़ों से लचका, पट्टा किरन, बनत, चुटकी गुखुरू उधेड़ २ कर टहलुई नाइन बारिन कहार खिदमतगार डोमिन गोड़िन की मारफ़त कौड़ियों के मोल लुटाये देती हैं और बाज़ार से मालपुआ, पूरी, कचौरी, अमिरती, खजले मंगा २ कर चुपके २ बिषमा २ कर्ती और अपने चोर साझियों को भी खिलाती ध्यान करो कि आपुस की नाइत्तिफ़ाक़ी और विरुद्धता कैसी दुष्ट है कि घर के मालिक तो दांतचबा और अपना लोहू के घूट पीपी कर रहजावें और हरामखोरे अलल्ले तलल्ले करे और सुनो बेटा तुमको पतिका लिहाज़ अवश्य है ईश्वर ने पुरुष को स्त्री पर बड़ा बनाया है स्त्री पर अपने पति की ताबेदारी धर्म है जो स्त्री

अपना और पति का दरजा बराबर जानती है वह बड़ी ना समझ है सब दिन पति को राज़ी रखना सब बातों पर उचित है और यह बात स्त्री की ताबेदारी पर उचित है जब स्त्री अपने पतिकी सेवा धर्म जानेगी अर्थात् उसकी आज्ञा के बाहर कोई काम न करेगी तो उसका पति भी उसकी ख़ातिर करेगा और सुनो सासु ससुर की सेवा भी पतोहू पर उचित है कोई स्त्री ऐसी बुद्धि हीन होती है कि बिवाह होते डोली से उतर तेही इस कहावत के अनुसार (पति खोल मेरा मक्रना मैं देखों घर अपना) यही बात चाहती है कि जिस ढंग से बने सासु ससुर से अलग हो रहैं परंतु अन्त को वह अपनी नियत के फल से दूध की ऐसी मक्खी जुदा करदी जाती है ससुराल वालों की दृष्टि में उसकी कुछ भी प्रतिष्ठा और क़दर नहीं रहती है अगर ध्यान करो तो बज़ुधा यही बात सासु पतोहों के बीच झगड़े की जड़ होती है अगर बहू ससुराल वालों से मिलजुल कर रहे तो उनकी आंखों की पुतली बनी रहे कोई दुष्ट बज़ुवों में लगाई बुझाई का भी ऐब होता है जहां ससुराल की ऐसी वैसी कोई बात

देखी सुनी तो अपनी मां बहिन के कान में चुपके से पड़ुंचादी नाहक़ दोनों ओर मेंढ़ेलड़ादिये परअन्त इसका रुसवाई और फ़ज़ीहती है इसके सिवाय बेटा तुमको खाने, पीने, चलने, फिरने, बात करने, मेंभी साधारण रीति चलनी चाहिये और सुन किसी वस्तु के मांगने याकोई अच्छी वस्तु दूसरेकेआगे से उठा कर खा लेने से आदमी नदीदा या हिर-सिहा समझा जाताहै खाने को नाम धरने या मुंह बिगाड़ने से नक्चढ़ा बोला जाता है बड़े २ कौर या जल्दी २ खाने से बेशऊरी औ बद सलीक़ा गिना जाता हैअपने बड़े बूढ़ों के आगे जल्दी कूद फांद में बेहयाई दाखिल है कार्य्य पड़े पर चिन्ता नहीं उसमें भी ध्यान रहे कि न इतनी जल्दी हो कि बिजली की चमकन नाम धरा जाय न इतनी धीरी कि मरी जूं नाम धरा जाय, हर बात स्थान समय देखकर उचितहै, जवाब भी अच्छा औरमीठा देना चाहिये बहुत बोलने से अहंकारी समझा जाता है न इतना चिल्लाय के बोलना चाहिये कि मुंह बढ़ी बहू नाम उपनाम होजाय न इतना धीरे कि सुनने में न आवे निमुंही पतेहू उपनाम मिल जाय भावार्थ यह कि सब कामों में मध्यम भाव है

मेरी प्राण लज्जा और शर्म सब बातों पर होना अवश्य है, शर्मवान कर्मवान, बेशर्म बेकर्म बहनी प्रसिद्ध है लज्जा और शर्म को मूल जानना चाहिये अपने काम को आपही करना ससुराल की वस्तु को आपनाही माल समझ कर ख़राब और बरबाद न होने देना चाहिये; शुभ-आगे चिरंजीव ॥

पत्र २६

उत्तर भानजी की ओर से मौसी को ॥

सिद्धि श्री ई मौसी जी को मेरी दण्डवत विनय के पीछे निवेदन यह है कि मैं आपकी क्षपा से अच्छी तरह हूं और आपके मन की खुशी और तन्दुरस्ती चाहती हूं-क्षपापत्र आया मैं क्षतार्थ हुई उपदेश के शब्द जो आपने प्रीति के कारण लिखे थे उनका धन्यवाद किस जिह्वा से करूं सत्य तो यह है कि जितनी प्रीति तुम्हें मुझ नालायक़ से है दूसरे से नहीं है मैं भी आपको अपनी माता से कम नहीं जानती हूं और आप की आज्ञा व उपदेशों पर ध्यान करूंगी और आपकी चिट्ठी जिसमें ये सब उपदेश क्षपा हुए हैं मैं ने ढकने दार ढोलने में रख छोड़ी है हर

घड़ी अपने गले का हार बनाए रहती हूं कलेजे से लगाए रहती हूं सब दिन बराबर दोनों वक्त भोर और शाम को राम नामकी तरह उसको पढ़-लिया करती हूं मौसी जी आपकी आशीर्वाद से यहां के सब लोग मुझसे खुश और प्रसन्न रहते हैं आज तक माता जी अर्थात् यहां तुम्हारी सम, धिन अपनी बेटियों से ज़ियाद: माया करती हैं और ननदें बहिन की तरह मुझे चाहती हैं जेठानियां देवरानियां भी मुझसे अलाहिदा होना पसन्द नहीं करती हैं सत्य यह है कि उमराव बहू अभी कड़ुवी जबान और ना समझ व छिछोर पन से अपने ससुराल वालों की आंखों से गिर गई थीं मौसी जी धन्यवाद की जगह है कि आप ऐसे पुरखिनियों के उपदेशों और आशीर्वा-दों के फलसे पराये लोगों अर्थात् सास ननद आदि मुझे कलकी आई हुई से ऐसी प्रीति करती हैं जिसका धन्यवाद मुझसे किया नहीं जा सक्ता है आप निश्चिंत रहें और जब तक मिलना नहो तब तक मेरे भाई और बहिनों की कुशल क्षेम लिखती रहा करो ॥

पत्र २१

भतीजे की चिट्ठी चची के नाम

पाठशाला में भरती कराने की सलाह में ॥

सिद्धि श्री ५ चचीजी महात्मीय को मेरी दण्डवत बिनय के पीछे बिदित हो कि नेच बिन्दु यशोदा को ईश्वर की क्रपा से आठवां वर्ष है यद्यपि मैं उस्को पढ़ाती हूं व शिक्षावली और पच हितैषिणी संपूर्ण कर चुकी है और पहाड़े भी बारह तक उस्को कण्ठ हैं छोटे २ अंक भी जोड़ लेती है परन्तु मुझको गृहस्थी के धन्धे के कारण उस्के ऊपर अधिक देखने भालने का योग नहीं बैठताहै इसवास्ते मेरे मनमें बहुधा होता है कि लीलावती के पाठ शाला में भेज दिया करूं परन्तु जोकि मुझे उनके पढ़ाने लिखाने के ढंग और पाठशाला के बन्दोबस्त से अच्छी तरह खबर नहीं है इस कारण यशोदा को वहां भेजने में मेरा जी आगा पीछा करता है आज मेरे मन से आया कि उनका पाठ शाला आपके परोस में है इस वास्ते आप वहां के हाल और उनके मिजाज का हाल अच्छी तरह जानती होंगी इस वास्ते इस काम में आप से सलाह लेनी अ-

वश्य चाहती हूं कि कृपा पूर्वक इस मुक़द्दमे में अपनी सलाह लिख भेजें उसके माफ़िक़ काम करूं मिती पूष बदी ४ सम्बत १९२९ ॥

पत्र २८

चची का उत्तर भतीजी के नाम ॥

स्वस्ति श्री नेत्र प्रकाश राम दुलारी को मेरी आशीस चिरंजीव के पीछे ज्ञात हो कि पत्र तुम्हारा पूस बदी चौथ सम्बत् वर्तमान का लिखा हुआ आया उसके आशय से विज्ञता हुई मेरी प्राण लीलावती का हाल क्या पूछती हो। नारायण यथा नाम तथा गुण उसके मन में परहेज सफ़ाई शुद्धताई मिलनसारी शील देश भर की अच्छी बातें भरी हैं क्यों न हो आखिर पण्डित भोजही की कन्या तो हैं जिनके बंश में लौंड़ी बांदीतक मूर्ख नहीं रहने पाती थी महाराज मानसिंह व सर्वजीत सिंह व रणधीर सिंह व पण्डित लक्ष्मीदत्त व गोपाललाल व सूर्य्यबली अच्छे २ कुटुम्ब की लड़कियां उनके पाठशाला में पढ़ने आती हैं उनकी युक्ति और विद्या ध्यान का। ढंग बड़े सलीक़े और शुद्धता के साथ है वहां

भेजना बहुत अच्छा है ईश्वर ने चाहा तो उनके युक्ति और प्रताप से बहुत जल्दी पढ़ने लिखने में होश्यार हो जायगी मेरा भी मन है कि बेटा जानकी जीको उनही को सौंप दूं इस वास्ते तुमको भी उचित है कि यशोदा को मेरे पास भेज दो मैं दोनों लड़कियों को लेजाकर लीलावती जीको सौंप दूं आगे चिरंजीव ॥

पत्र २९

मामी की चिट्ठी भानजी के नाम

मूर्ख और लिखने पढ़नेके हेतु में ॥

स्वस्ति श्री नेच पूज्यनीय प्रकाशक उत्तम बरण लक्ष्मी स्वरूपा चांदरानी को आशीष पहुंचे बाहर बाहर से मालूम हुआ कि तुम पढ़ने लिखने में मन कम लगाती हो इस वास्ते तुम्हारे माता पिता और शिक्षक का मन तुमसे अप्रसन्न रहता है मुझे इस हाल के सुन्ने से बड़ा शोच हुआ क्योंकि लड़कपन में ईश्वर की दया से लिखने पढ़ने में इतना श्रम करती थी कि सब लड़कियों से प्रथम अपना पाठ कंठ करके सुना देती थी जिसके कारण और लड़कियों से तुम्हारा अधिक मान

होता था और मिठाई आदि भी तुमको अधिक मिलती थी राम २ अब तुम्हारा मन ऐसा उचाट होगया है कि एक पाठ दो २ दिन तक नहीं कण्ठ कर सक्ती हो पिछले का पढ़ना कौनकहे जिन लड़कियों ने पीछे तुमसे पढ़ने में आरम्भ किया था वे आगे होगईं मेरी प्राण खूब याद रक्खो कि मनुष्य की सब बड़ाई और प्रतिष्ठा विद्याही से होती है मूर्ख मनुष्य गाय बैल से भी बुरा समझा जाता है इस कारण कि गाय से दुध प्राप्त होता है कि जिससे घी दही मलाई खोया आदि नाना प्रकार की मज़ेदार चीज़ें बनाई जाती हैं बैल से खेती और लादने का काम लिया जाता है सुनो बेटी संसार में मूर्ख के बराबर कोई बेइज़्ज़त और हीन नहीं समझा जाता मरना जीने से अच्छा जानते हैं क्या तुमने पुस्तकों में नहीं पढ़ा है और उनमें मूर्खों की हीनता और अपमान नहीं देखा, उनमें तो यह भी ज्ञात है कि मनुष्य को जो जाति और कुल पर अपनी इज़्ज़त का घमण्ड रहता है सो वह सही नहीं है किन्तु विद्या और गुण पर है जैसा कि बुद्धिमानों ने कहा है कि मनुष्य की प्रतिष्ठा विद्या से होतीहै न कि कुलसे

और प्रसिद्ध है अगर कुल और जातही पर होता तो ग़ालिबजंग सरकार में कुरसी क्यों पाते और सिकंदर मिरज़ा और फ़रेदूं मिरज़ा गली २ ठोकरें खाते इस वास्ते बड़ों की तरह तुमको उपदेश करती हूं-तुमको चाहिये कि मेरे उपदेशों पर थोड़े ही दिन में श्रम करके अवश्यक कामों के लायक़ लिख पढ़ हिसाब किताब में विज्ञता प्राप्त करलो जो आगे तुम्हारे काम आवे सुनो बेटी प्यारी विद्या सीखने के येही दिन हैं इस उमर में जो कुछ सुधि बुद्धि होजायगी आगे तुम्हारे काम आवेगा विद्या सीखने की ताक़ीद के सिवाय क्या लिखा जाय आगे शुभ ॥

पत्र ३०

भानजी की चिट्ठी मामी के नाम ॥

सिद्धि श्री ५ मामी जी रक्षपालनी को मेरा साष्टांग प्रणाम पहुंचे-निवेदन यह है कि कृपा पत्र मिती पौष शुदि पंचमी सम्वत् वर्तमान का लिखा हुआ उपदेशों के सहित आया मेरी प्रतिष्ठा और आबरू का कारण हुआ सत्य है इन दिनों मेरे लिखने पढ़ने में बड़ा हर्ज और

अनुध्यान हुई इस्का मुझे शोच है परन्तु आप निश्चय करके जानें कि यह अनुध्याय लाचारी से हुई है मेरी इसमें कुछ भी ढील नहीं है आप इस्का असल हाल ध्यान करके सुनें वह यह है कि चार महीने इस्के पहिले मुझको ज्वर आया था यद्यपि एक टूटे फूटे बैद्य के इलाज से जाहिर में अच्छी मालूम होती थी पर तप हड्डियों में मौजूद थी जिसके कारण देह आलस्य में रहा करती थी श्रीयुत माताजी व शिक्षकानी जीने मेरी ढील को जो केवल बीमारी के कारण से थी बदशौक़ी समझा हाल में हकीम नव्वा साहिबने जो पुराने और बुद्धिमान हकीम हैं मेरी नाड़ी देखी तब अजीरन ज्वर तजबीज करके दवाई की अब वह ज्वर जाता रहा और अच्छी तरह अरोग्यता प्राप्त हुई और जो बीमारी के कारण आलस्य होगया था सो जाता रहा परमेश्वर ने चाहा तो श्रम करके अपने साथ बालियों से थोड़ेही दिन में फिर आगे होजाऊंगी अब थी मती शिक्षानीजी आगे के सदृश प्रसन्न और राजी रहती हैं बल्कि उस ताने तिश्ने से उन्हे बड़ा कलेश होता है जो मेरी बेरामी की दशा में संदेह से

करती थीं, मुझे निश्चय है कि जब आप भी मेरा यह ब्यौरा सुनेंगी। तो मेरे अपराध को क्षमा करेंगी। आगे दरशनों की अभिलाष से अधिक क्या प्रार्थना करूं॥

---

३१ पत्र

सासु के नाम कुसुम का रंग निकालने और गुल अनार वा नारंगी रंग रंगने की रीति में॥

सिद्धि श्री ६ सासु जी सर्वोपरि विराजमान को मेरी दण्डवत। विनय के पीछे निवेदन यह है कि भाई रामनारायण का विवाह माघ सुदी एकादशी को ठहरा है इस वास्ते आपकी समधिन का मनोर्थ और मेरी करजोर बिनय यह है कि आप कृपा पूर्वक बीस पच्चीस दिन प्रथम ही से विराजमान हों जिस्में सब कामों में आप से सलाह और आशय ली जाये आप की माता समान प्रीति से आश है कि मेरी प्रार्थना को आप खुशी से मान लेंगे। श्री युत मेरी यह आशय है कि दुपट्टे आदि विवाह के कपड़े घरही में कुसुम चढ़ा के रंग लिये जांय क्योंकि रंगरेज चौगुने पचगुने दाम तो लेते हैं

परंतु कपड़ा मनके लायक़ नहीं रंगदेते हैं जिस रीति से आपको रंग निकालते और गुल अनार और नारंगी रंग रंगते मैंने देखा है वह रीति मेरे मनमें है परंतु मैं निश्चय होने के वास्ते लिखती हूं कि आप देख कर इसमें जहां कहीं अशुद्ध पाया जाय उसे ज्ञात कीजिये और कृपा पूर्वक बड़ों की तरह कासनी वा पिस्तई आदि रंगों के रंगने की युक्ति भी लिख भेजिये कि उसके मवाफिक दुपट्टे आदि रंग लिया करूं। श्रीयुत आपको इस ढंग से रंग निकालते मैंने देखा है कि आप सूखे जुये कुसुम में थोड़ासा पानी छोड़ कर गीला करती थीं और थोड़ी देर के पीछे उसको कपड़े में रख कर तिपाई पर बांध देती थीं और पानी डाल दिया करती थीं उसमें से पीला पानी जो टपकता था उसको अलग रख छोड़ती थीं और जब सफ़ा पानी चूने लगता था तब कुसुम को इस तरह मल देती थीं कि वह खूब मुलायम और नर्म होजाता था और यह भी मुझको याद पड़ता है कि पहिले कुसुम को नांद या कठौते में धर कर सेर भर में आधपाव सज्जी मिला कर मलती थीं फिर पहले की तरह

कपड़े में धर कर तिपाई में टांग देती थीं और कपड़े के चारों कोने तिपाई के चारों कोनों में बांध देती थीं और अटकल से अवश्यकता के माफिक पानी डाल देती थीं वह रंग जो सज्जी के खारे पन से चूता था अत्यन्त लाल और अच्छा होता था उसमें आप गुलेअनार रंग रंगती थीं फिर उसमें इतना पानी छोड़ती थीं कि सब रंग निकल जाता था जिसमें गुलाबी वा नारंगी आदि रंग रंगती थीं। गुलेनार रंग आप इस ढंग से रंगती थीं कि प्रथम डुपट्टे को नखालिस पानी में डुबो के निचोड़ डालती थीं रंग बैठने के वास्ते थोड़ी देर तक पड़ा रहने देती थीं फिर उसको निचोड़कर पांच निम्बू का रस चावल या किसी चीज़ का माड़ मिला कर और छान कर उस डुपट्टे को उसमें बुड़ा देती थीं फिर निचोड़ कर छांह में सुखा लेती थीं जब किसी क़दर नम रहजाती उसको शिकने मिटा के तह करलेती थीं। और नारंगी रंग आप इस तरह रंगती थीं हरसिंघार के फूलों की डंडियों में ढाई सेर पानी डालकर उबाल देती थीं और दो सेरपानी रहजाने के पीछे उसको छान लेती थीं और

डुपट्टे को ख़ालिस पानी में डुवो और निचोड़कर उसी रंग में डाल कर थोड़ी देर तक रंग पीने के कारण पड़ा रहने देती थीं फिर निचोड़कर हवा में ख़ुश्क करके कुसुम के दूसरे तरह के रंग में भिगो देती थीं और कुछ देर के पीछे खूब निचोड़कर दो निम्बू के रस में माड़ दार पानीमें मिला कर डुपट्टेको भिजो देती थीं और उसको निचोड़कर हवा में सुखाके प्रथमकी तरह शिकनें दूर करके तह करलेती थीं। आगे दण्डवत् ॥

---

३२ पत्र

सास का उत्तर पतोहू के नाम ॥

कासनी व पिस्तई व बसन्ती आदि रंग बनाने की तरकीब ॥

स्वस्ति श्री पुत्र तुल्या नेच बिन्दु स्वरूप रानी बहू को मेरी आशीष पहुंचे भावार्थ यह कि चिट्ठी तुम्हारी आई उसके पढ़ने से मन को ख़ुशी और कलेजे को ठंढक हुई चिरंजीव रामनारायण का बिवाह देखने का बड़ी मनोर्थ है परमेश्वर ने चाहा तो उसके बिवाह में मैं अपने तन मनसे शरीक होंगी और बिवाह की बाबत मुझसे जो कुछ राय पूछी जायगी अपनी बुद्धि और देखे के

मवाफ़िक़ सलाह दूंगी क्योंकि मैं तुम्हारी भलमंसी और ताबेदारी और समधिन की प्रीति और ख़ातिर से इतनी राज़ी और ख़ुश हूं कि अगर मुझको बुलावा भी न आता तो भी मैं तुम्हारे भाई के विवाह में शामिल होती। हां बेटी तुमने कुसुम का रंग निकालने और गुलेअनार नारंगी रंग रंगने की उपाय बहुत सही और दुरुस्त लिखी है तुम्हारी बुद्धि और धारण शक्ति बड़ाई के लायक़ है और रंग जो तुम्हारे आगे नहीं रंगे गये हैं उनके रंगने से अलबत्ता लाचार हो सो मैं उनके उपाय लिखे देती हूं इसीके मुवाफ़िक रंग लिया करना और यह भी जानो कि सेर भर अच्छे कुसुम के रंग में एक दुपट्टा गुलेअनार बहुत अच्छा लाल भभूका रंग सक्ता है यद्यपि इतनेही रंग में दो दुपट्टे रंगे जाते हैं परंतु भभूका और तेज़ रंग नहीं होते और सुनो कासिनी रंग इस ढंग से रंगा जाता है कि नील वालों की मठोर का पक्का नील दो पैसे भर लेकर कठरे आदि में डाल कर तीन सेर नख़ालिस पानी में डाल कर इस तरह मथना चाहिये कि नील और पानी एक रंग होजावें फिर दुपट्टे को सफ़ा पानी

में डालो और निचोड़कर थोड़ी देर रंग पीने के वास्ते पड़ा रहने देना चाहिये पीछे उसे निचोड़ कर और सुखा कर कुसुम के दूसरीदफ़ा निकाले हुए रंग में रंगना चाहिये फिर उसे तुरशी और कलप देकर जैसा दस्तूर है उसी तरह खुश्क और तह कर लेना चाहिये। अगर पिस्तई रंग रंगना चाहो तो पहिले नील वालों के पक्के नील में डुबोकर फिर हलदी के रंग में रंग कर पानी में धुलवालो उसके पीछे दही के रंग में डुबो दो फिर तुरशी और कल्प देकर तह कर डालो। सबज़ और पिस्तई रंगने की एकही रीति है बज़ुत नील देने से सबज़ और कम देने से पिस्तई रंग रंग जाता है बसन्ती या पीले गेंदे के फूल या हरसिंघार की डण्डियों वा हलदी या तुनको चुरो के उसमें रंगने से बनता है बसन्ती रंग में पीले से अधिक रंग दिया जाता है। अव्वासी रंग में चार माशे नील पानी में घिसकर रंगो फिर कुसुम के पाव भर रंग में रंगो फिर उसको ऊपर की तरह तुरशी और कल्प देकर तैयार करलो। बैंजनी रंग पक्की नील और कुसुम से रंगा जाता है ऊदा लाल और काली के मिलाने से,

गुल अफ़तालू कुसुम और खटाई से, सुनहरा लाल और पीले से, जाफ़रानी कुसुम और हर सिंघार से, गुलाबी अकेले कुसुम को दूसरे बार निकले हुये रंग से, करंजी सबजी और पीले से, पियाजी तीसरे बार कुसुम का हलका रंग देने से, नीला केवल नील का हलका रंग देने से, सुरमई नील का गहरा रंग देने से, फ़िरोजई रंग रंगने का यह ढंग है कि दो पैसा भर नई सबजी बानातके कतरन को पतीली में जोशदो और माशा भर नमक या फिटकरी रंग काटने के वास्ते छोड़ दो जब रंग निकल आवे तब प्रथम की रीति से रंग लो। आगे आशीष और समधिन जी को मेरी भेंट घाट पहुंचे बच्चों की बलायें लेना ॥

पत्र २३

छोटी ननद की चिट्ठी बड़ी भावज को ॥

अपना मासिक माँगना और लिखने पढ़ने का हाल ॥

सिद्ध श्री ५ भाबीजी महात्मीय को मेरी दण्डवत पहुंचे। बिनय यह है कि आपने अकबरा-बाद जाने के समय कहा था कि मैं वहां पहुंच कर दो रुपिया माहवारी पुस्तकादिक खर्चों के

वास्ते महीने २ भेजा करूंगी सो खर्च तो बीच ही रहा आपने अभी तक अपनी ख़ुशी आनन्द का हाल तक नहीं लिखा, इस कारण से मुझको बड़ा सोच रहा करता है प्रार्थना है कि आपका छपा पत्र जल्दी आवे और मुझको खर्यताई होवे। भाबीजी मेरे लिखने पढ़ने का यह हाल है कि भोजप्रबंधसार और विद्याङ्कुर पढ़चुकी हूं श्रीयुत महाराणी माता जी की मंशा थी कि देवरानी जेठानी को पुस्तक का आरम्भ कराऊं इस अन्तरमें शिवकाइनी जी की भानजी का विवाह आन पड़ा और वे एक महीने की छुट्टी लेकर अपनी बहिन के यहां चली गईं इस कारण मैं पुस्तक आरम्भ न कर सकी आज चौथा दिन है कि शादी से फ़राग़त पाकर विराजमान हुई हैं और कल बुद्धके दिन वे मुझको किताब शुरू कराई है मेरे इस कहने से आपको यह शंका नहो कि शिव-कानी जी के छुट्टी में मैंने महीने भर खेल कूद में गवांया हो भाबीजी ऐसा नहीं हुआ किन्तु इतने दिनों में मैंने अपना भूला हुआ याद कर लिया और साफ़करने और अक्षर बनाने में और चिट्ठी लिखने में हर दिन आठ २ घंटा अवश्य

मेहनत करती रही हूं और सब ध्यान मेरा अपनी पियारी भतीजी मुन्नी में लगा है उस्की तुतली २ और मीठी २ बातें मुझे सब समय याद रहती हैं उस्के नन्हे २ हाथों से प्रणाम करना और कुशल प्रश्न पूछना और छोटे २ पावों से दौड़ कर लिपट जाना और गले में बांह डाल देना बिसरता नहीं है देखें परमेश्वर वह दिन कब करेगा जब मैं उस्को देखूं और बलायें लेकर पियार करूं और उस्की मीठी २ बातें सुनूं, आप मेरी ओर से उसकी बलायें लीजियेगा और प्यार कीजियेगा शुभ ॥

पत्र ३४

बड़ी भावज का उत्तर

छोटी ननद के नाम ख़र्च पहुंचने की तरकीब ॥

स्वस्ति श्री परमप्रिय बहनजी सुखवती को मेरी आशीस पहुंचने और देखने की प्रीति के पीछे ज्ञात हो कि बहिन न मैं बिश्वास घात हूं और न तुम झूठ कहने वाली हो क्या करूं दो रुपया महीने २ कैसे भेजा करूं अगर दो रुपये के टिकट चिट्ठी में रखकर भेजूं तो बिना रजसटरी कराये

चिट्ठी के खोजाने का डर रहता है और मानों टिकट तुमको किसी ढंग से मिल भी जाये तो इतने टिकट तुम्हारे किस काम आवेंगे और किस तरह से उनको बेचोगी इसवास्ते मेरी यह सलाह है कि जब कोई आदिमी श्री सासुजी के वास्ते ख़र्च लेकर खाना हुआ करेगा या नोट मोल लेकर भेजा जाया करेगा तो उसी के साथ में तुमको भी सहल से ख़र्च पहुंचजाया करेगा। नहीं तो बहिन तुमको हर महीने ख़र्च मिल जाने की क्या अच्छा उपाय इस समय मेरे दिलमें आया है वह यह है कि तुम दो रुपया महीना श्रीयुत सासुजी से ले लिया करो और जब यहां से तुम्हारे वास्ते ख़र्च जाया करे श्रीयुत महारानीजी को दे दिया करो। बहन मेरा दिल बहुत आनन्द हुआ जो तुम लिखने पढ़ने में अच्छी तरह दिल लगाती और श्रम करती हो तुम्हारा लिखना आगे से अब बहुत अच्छी होगया है परमेश्वर की दया से जमीन आसमान का फ़रक है नहीं तो मुझे कभी इसका विश्वास न होता तुम्हारे भाई साहिब भी तुम्हारा लिखा हुआ पत्र देख कर बहुत खुश हुए और कहा कि यहां से जब कोई

आदिमी जाने लगेगा तो उसके हाथों दो थान रेशमी चारख़ाने के सुखवती को इस श्रम के इनाम में भेजे जावेंगे और सुनो बहन तुम्हारी भतीजी भी तुमको बज़ुत सुध किया करती है इस वक़्त की हंसी की बात सुनने के लायक़ है वह यह है कि इस समय खेलती २ मेरे पास दौड़ी आई और गले में लिपट कर अपनी तोतली ज़बान से इस तरह मुझसे पूछने लगी मेली बुआ फुल फुल कहो यह चित्थी किस के नाव लिखती हो मैंने कहा कि बच्ची यह चिट्ठी तुम्हारी फूफी के नाम लिखती हूं तो क्या कहती है कि मेली अच्छी बुआ मैं तुम्हने हाथ जोती हू इस चित्थी में फूली जानको मेली पालगन निक दो अर्थात् मेरी बूआ सच कहो यह चिट्ठी किसके नाम लिखती हो मेरी अच्छी बुआ मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं इस चिट्ठी में मेरी फूफी जानको मेरा पालागन भी लिख दो आगे बज़ुत २ प्यार ॥

पत्र ३५

तथा छोटी भावज की ओर से

बड़ी ननद को बिवाह में फ़ुज़ूल ख़र्च करने में ॥

स्वस्ति श्री ५ महा प्रिया ननद जी को मेरी

दण्डवत पहुंचे। बिनय यह है कि उनका याने आपके छोटे भाई साहिब को बिचार है कि सौ बीगहा सीर की भुई और गुरथान का बाग़ और बीच की सरायकी दुकाने बेचके भैया राम प्रसाद का बिवाह बड़े धूम धाम से करें यद्यपि कि हर एक उपाय और रीति से उनके कान तक पहुंचाया गया कि कुल इतनी ही जायदाद से पुरूषों का नाम है और लड़के बालों के जीने का सहारा है, मौरूसी संपति कामिटाना मुर्दों की हड्डियां बेचना क्या उचित है, उसको बेंच करके आगे कहां से खांयगे अवस्था भर लड़के बाले भूख प्यास की दिक़्त उठावेंगे अंबिया तक चटनी को न पावेंगे। अब से दूर दुश्मनों के कान बहरे मरे पर कफ़न तक की मुश्किल पड़े परन्तु उनके बिचारमें कुछ ऐसी बेमत्वच और दिल चालाव समा गया है कि अपने नफ़ा और नुक़सान का कुछ भी ध्यान नहीं करते ननदजी मुझे तो बेचने खेंचने क़र्जवाम के नाम से ख़ुफ़कान होता है, कलेजा दो २ हाथ उछलनेलगता है सत्य तो यह है कि फाट पड़े वह सोना जिसे टूटे कान ऐसे नाम को पैलगी और घड़ी भरे के सावकाश

और मुंह देखे की वाह२ को दण्डवत। ननद जी मैं तो शर्म की राह से इस में अधिक तकरार कर नहीं सक्ती क्योंकि स्त्रियों को मर्दों के मुह लगना भल मंसी की बात नहीं है परन्तु आप मेरी और उनकी दोनों की बड़ी बूढ़ी हैं शायद मेरा बिचार आपके जान में ठीक समझाई देव मेरे बिचार में तो बाद हवाई और झूठी नाम वरी के वास्ते पुरुषों का नाम मिटाना उचित नहीं है चादर से बाहर पांव फैलाना अच्छा नहीं होता आगे वे मालिक हैं, हम वे बस और लाचार हैं आगे दण्डवत ॥

---

३६ पत्र

उत्तर बड़ी ननद की ओर से

छोटी भावज के नाम अपने भाई के समझाने के बिषय में ॥

स्वस्ति श्री भावी जी बहिनि तुल्या को मेरी आशीस के पीछे ज्ञात हो कि चिट्ठी तुम्हारी आई ब्यवरा मालूम हुआ भावी जी तुम चिरंजीव रहो बड़ी अग्र सोच और शऊर की पुतली हो जो तुम्हारी बात होती है वही सदा मेरी भी राय होती इस बात में भी एकही सलाह है आज छोटे

भैया को बज़ुत हसी ख़ुशी पाकर तुम्हारे लिखे बमोजिब मैने उसको उपदेश किया प्रथम तो मैं अपनीही गाया किये और गप शप हांका किये, अपने स्वभाव के मवाफ़िक़ बेकार तक़रीर किया किए, अलई का पलवा बका किए, परंतु जब मैने कहा कि भाईजी तुम्हारे दुश्मनों के दिमाग़ में गर्म्मी चढ़ गई हो तो इलाज करो शायद भैया ज़ोरावर सिंह का हाल तुमको याद नहीं रहा कि उन्होंने बड़े बूढ़ों का कहना न माना और अपनी पचहत्तर बीघा भुइं और सदर बाज़ार वाले दोनों बंगले दो हज़ार रुपये पर बेचकर भैया चन्दी सिंह की बरात बड़े धूम धाम से की, बरात के दूसरे दिन देखने में आया कि घरके भीतर मालिन, डोमिनियों, चूने वालियोंने भाबीजी कादम नाकमें कररही हैं और बाहर चौपारमें भैया ज़ोरावर से तेली, तमोली, कुंजड़े, चिकवे कुम्हार, हलवाई, नक़ारेवाले, शहनाई वाले, ताशे वाले, आतशबाज़, भांड़, भगतिये आदि कौआ गोहार कर रहे हैं, मुहसे सीधी बात नहीं फूटती है अंत यह हुआ कि जब पतोहू का सब गहना औने पौने बेंच खर्च कर के उनको राज़ी

किया, तब उनकी कांव २ से छूटे और हर एक की चिड़िया नोचन से जान बची। अब बिचारी एक रातकी ब्याही हुई दुलहन की नाक में खहाग की निशानी नथ तक न रहा कहो भैया अपने पराये में उनकी नाक कटी या रहगई और सुनो जब बनिये ने अपने रुपये न पाये छिन्न देना बन्द करदिया यहा भैया के घर में क्या धरा था और बाप दादे की छोड़ी हुई जायदाद पहलेही गवा चुके थे अब बहू के गहने का भरोसा था वह बाद हवाई फुलझड़ियों और गुब्बारों में उड़ा चुके थे अब घरमें चूहे डण्ड पेलने लगे चार दिन की आई हुई दुलहन को चालों ही में चार २ उपास हुए चौथे चाले में जो नैहर गई वहां से फिर आने न पाई बेटा, भी खाने पीने का सुबिहता पाकर ससुराल में रहने लगा इसने बालों की बनपड़ी छेड़ना शुरू किया कि वाह २ ठाकुर साहब मौरूसी जायदाद बेच कर तो आपने खूब व्यापार किया कि नफ़ा अर्थात् पतोहू के आश पर असल जायदाद अर्थात् लड़के को भी खोया आप का हाल तो ठीक २ इस कहावत के तुल्य होगा कि माड़े दोनों दीन से गये न इलुवा न माड़े अब कहां

तक बक २ करूं तुम ऐसे बड़े अजान नहीं जो सारी राम कहानी कह सुनाऊं मेरे प्यारे भैया अक्सर मन्द औरों पर बीती हुई बातों से अक्सर सीखते हैं इसी तरह तुम को भी चाहिये कि जो काम करो बुद्धि की सलाह से करो किसी के कहने सुनने से भूल जाना अच्छा नहीं है घर फूक तमाशा देखने वालों के बह काने में आजाना अक्सर की बात नहींहै भैया जोरावर की तरह बाप दादे की जायदाद औने पौने लगा कर, मोह का गहना नष्ट कर के समध्याने में लज्जित होना क़र्ज के वास्ते तुम्हे भी अच्छा मालूम होता है यह जायदाद तुम्हारे हाथ फिर लौट कर न आवेगी सारी उमर जेरबारी न जायगी दैव ऐसा न करे दुश्मनके कान बहरे जब तकलीफ़के दिन आगे आवेंगे मुफ़तखोरे सब चम्पत हो जायंगे, भैया सच कहना हम सब औरतों का नाम तो मर्दों ने बुरा कर रक्खा है, कम अक्लि उप नाम दे रक्खा है भला तुम्हारी ऐसी बुद्धि रखने वाले मर्दों को कौनसा उपनाम देना उचित है भैया मेरा कहना बनाय करके मानो कि तुम अपनी हठ धर्मी से आगे के लिये अपना ऊंच नीच नहीं देखते अगर

तुम विद्यावान हो भैया सच कहना स्त्रियों का नाम तो मर्दों ने बद कर रक्खा और दुष्टात्मा उपनाम देरक्खा है तुम्हारी सी बुद्धि रखने वाले मर्दों को कौनसा उपनाम देना चाहिये मेरा कहना सच कर मानो तुम्हारी मूर्खता ही तुम्हारे अपूर्व चिन्ता की बड़ी कारण होती है अगर तुम पढ़े लिखे होते तो अपने भले बुरे पर अवश्य ध्यान करते, तथापि अभी कुछ नहीं बिगड़ा है जो अब भी अपना भला चाहते हो तो मेरे उपदेशों पर चलो नहीं तो तमाम जिन्दगी भर पछिताओगे और सारे दुनिया के ओरहने उठाओगे भावार्थ यह कि जब मैंने उनको दुनिया को ऊंच नीच बताया तो लज्जित हुए और कहने लगे कि आप जो कुछ मुझे आज्ञा देंगी उसी पर चलूंगा आपके आज्ञा से बाल बराबर कभी ज्यादा न होगा तो भाभी तुम को सुधारक हो जो तुमने मांगा सो यही मिला अब भैया के दिल से मजूसी और झूठ बातें जाती रही परमेश्वर की इच्छा से अब तुम्हारी सलाह के माफिक और अपने सावकाश के बराबर बरातले जांयगे सुफत के कर्ज मर्ज से बचेंगे तुम निधड़क रहो

किसी तरह का शोच और फ़िकर अपने दिल में न रक्खो आगे शुभ ॥

---

३७ पत्र

छोटी भावज की ओर से

बड़ी ननद के चरणार बिन्द में भूनी खिचरी बनाने की रीति में ॥

सिद्धि श्री लक्ष्मी स्वरूप ननदजी को बहुत २ प्रणाम पहुंचे, आगे आप के छोटे भाई को अच्छा खाने का बड़ा स्वाद है, आज मुझ से पोलाव पकाने को कहा था जिस तरह पर मुझे आता था मैंने पका दिया जब खा पी कर सुचित्त हुये तब मुझ से कहा कि जैसी सुस्वाद भूनी खिचड़ी तुम पका जान्ती हो वैसा अच्छा पोलाव पकाना नहीं जानती हो हां हमारी बड़ी बहन बहुत अच्छा सुस्वाद पोलाव पकाती हैं तुम भूनी खिचड़ी पकाने की तरकीब लिख कर उनके पास भेज दो और पोलाव पकाने की तरकीब लिखवा मंगाओ इस वास्ते प्रार्थना करती हूं कि उन्होंने जो कौरमा पुलाव व यखनी पुलाव बताया सो उसी पकाने की तरकीब क्षमा करके लिख

भेजिये कि उसके माफ़िक़ कभी २ उनके लिये बना दिया करूं ननदजी भूनी खिचड़ी हमारे यहां इस तरह बनती है कि पहिले पाव भर घी बरतन में रख कर चूल्हे पर चढ़ादे जब थोड़ा होजाय पाग तब मुसल्मान के यहां छटाक भर प्याजके लच्छे उसीमें भूंज कर मिला लेते हैं और हिन्दुओं के यहां रत्ती भर हींग से छौंक देकर उसे फेंक देते हैं तब छटांक दालि १ छटांक अच्छे चावल को साफ कर उसी में भूज जब खिचरी भुन जावे तब तीन माशे लवंग और छः माशे जीरा इला-इची और कालीमिरच और पाव भर कच्चा दूध छोड़ और चला कर मिला देवे फिर गर्म अथवा ताज़ा पानी इतना छोड़े कि खिचड़ी से नाखून भर ऊंचा रहे जब खिचड़ी अधागली होजाय तब बटलोही पर ढकना देकर चारों ओर से आटे की बत्ती से खूब जमादे कि जिसमें उसकी भाफ निकलने न पावे तब अंगारों पर रक्खे और थोड़े से अंगार ढकने पर रखदे जिसमें खिचड़ी दम हो जाय तब घड़ी के पीछे आग से उतार लेवे आगे शुभ ॥

पच ३ट

उत्तर बड़ी ननद के ओर से

कोरमा पुलाव यखनी पुलाव पकाने की तरकीब ॥

स्वस्ति श्री परम प्रिय छोटी भावज को मेरी आशीष पहुंचे आगे मालुम हो कि आज मैंने तुम्हारी लिखी हुई तरकीब के अनुसार भूनी खिचड़ी पकाई सो बड़ी सुस्वाद बनी खिचड़ी पकाने की तरकीब मेरी जान में इससे बढ़ कर न होगी और फूफीजी को तो ऐसी भाई है कि उन्होंने कह दिया है कि जाड़े भर मेरे वास्ते इसी तरकीब से खिचड़ी बना करै अब कोरमा पुलाव जो कभी कभी सरकार के वास्ते हमारे यहां पकता है उसकी तरकीब सुनो कि पहिले मांस के तीन पाव के टुकड़े पानी में तीन बेर धोवे और सेर भर दूसेमाली चावल पानी में भिगो देवे और फिर छटांक भर अदरक और लहसन का रस और आधो छटांक सांभर और पाव भर दही उन टुकड़ों में मिला देना चाहिये फिर डेढ़ पाव घी में उन टुकड़ों को इतना भूंजना चाहिये कि लाल और अधगले हो जांय तब टुकड़ों को निकाल कर बचे हुये घी में

चांवलों को भून कर टुकड़ों की तरह जमावे और आधी छटांक नमक तीन २ माषा लौंग और इला यची छः माषा काली मिरच और आध पाव छनी हुई मलाई और पाव भर दूध डाल कर उलट पुलट दे और ताज़ा पानी इस अंदाज़ से छोड़े कि चावलों से नाखून भर पानी ऊपर रहे और आंच मध्यम कर देवे जब चांवलों में दो एक कनकी रह जावे और पानी सूख जाय तब उसको दम होने के लिये अगर पानी रहा तो छन्ना लगा कर पसा देना चाहिये फिर दो माषा केसर तीन चार पैसे भर केवड़े में पीस कर उसपर छींटा दे देना चाहिये और जिस तरकीब से दमकिया जाता है उसी तरह दम कर अगर यखनी पुलाव पकाना मंज़ूर हो तो खालिस पानी के बदले में मास को जोश देकर उसके रस में चावलों को पकालेवे ॥

---

३८ पत्र

देवरानी की ओर से जेठानी को ॥

सिद्धि श्री पू जेठानी जी प्रतिष्ठनीया को मेरा पालागन पहुंचे इसके पहिले तुम्हारी एक चिट्ठी

भैया सीताराम के पैदाइशने की मुबारक बादी की पहुंची थी और उसमें यह भी लिखा था कि मैं जर्दा पकाने की तरकीबें लिखकर भेजूंगी परंतु उस दिन से तुमने कोई अपना आदमी न भेजा और न मुझे यहां कोई मोतबर आदमी मिला अब रामदीन उन्नांव से फिर आया है सो शुभ समचार लेने के वास्ते आपके चरणार बिन्दो में भेजा, दो जोड़े घूंघुरू, एक हंसुली, दो जोड़े कड़े, पांच कुरते, चार पैजामें, सात टोपियां लड़के के वास्ते भेजती हूं ॥ जरदा पकाने की तरकीब भी पहुंचती है प्रार्थना यह है कि आप अपने और भैया के समाचार लिख भेजिये और कृपा करके फिरनी पकाने की तरकीब लिखकर इसी आदमी के हाथ भेज दीजिये बहिन जर्दा पकाने की तरकीब यह है कि तीन पाव या इससे कम ज्यादह खांड़ या क़ंद की पाग बनाके और छः माशे केसर, छटांक भर केवड़े में पीस कर छटांक भर घीमें मिला दे फिर इससेमाली चावलों को उबाल देकर कपड़े में पसा ले फिर केसर का रंग देकर उसी पाग में पकाले और एक माशे गुजराती इलाची सवा पाव वा कम

ज़्यादा घी में भून कर उसे छोड़ देवे और फिर छटांक २ भर या इसे थोड़ा या ज़्यादा किशमिश बादाम पिस्ता उसपर छिड़क कर पुलाव के समान दमकर देवे अगर केसर की जगह हल्दी का रंग देना चाहे तो हल्दी को भूभल में भुल भुला कर पानी में पीसकर छानले और उसी हल्दी को पानी में पका कर उसमें चावलों को उबाल कर जब चावलों में उबाल आजावे तब ऊपर की लिखी हुई युक्ति से पाग में पका कर दम बन्द कर देवे आगे शुभ ॥

---

४० पत्र

जेठानी की ओर से गहने और कपड़े की रसीद और फिरनी पकाने की तरकीब ॥

स्वस्ति श्री परम प्रिय और सुढंग सूपिणी को मेरी आशीस पहुंचे तुम्हारे देखने की मुझे बड़ी अभिलाषा है तुम्हारी चिट्ठी सब चीजों समेत आई शुभ समाचार जानने से जीको बड़ा आनन्द हुआ तुम्हारी चिट्ठी आने से पहले चार दिन भैया सीता राम के शत्रुओं का जी व्याकुल हो गया था परन्तु परमेश्वर की कृपा से

दूसरे दिन अच्छा होगया अब दैवयोग से खूबी चंगा और तंदरुस्त होगया है ख़ातिर जमा रक्खो और अपने शुभ समाचार हमेशा कहला भेजा करो। फिरनी पकाने की तरकीब यह है कि चार पांच पैसे भर चावल तीन चार बेर पानी में धोकर थोड़ी देर तक भीगने देवे फिर सुखाकर दलिये के माफ़िक पिसवा लेवे फिर सेर भर खालिस दूध को उबाल देवे जब उसका पानी खप जाय तब चावलों का दलिया दूधमें छोड़ता जावे और चमचे से हिलाता रहे कि गुलथियां न पड़ने पावें उसके पीछे डेढ़ पाव वा इसे कम ज्यादा कन्द या शक्कर उसमें डाल कर थोड़ी देर पकने देवे फिर उतार कर छटांक भर केवड़े का अरक मिलाकर तश्तरियों में जमा देने और छटांक भर पिस्ता और छिले हुये बादाम को छिड़क कर उसपर चांदी के वरक लगा देवे आगे तुम्हारे देखने के बराबर कोई इच्छा नहीं है—इति

४१ पत्र

दामाद की चिट्ठी सास के नाम

दो सौ रुपये की रसीद मांगनी क़लिया और तरकारी पकाने की तरकीब ॥

सिद्धि श्री ई माता तुल्य पूज्यनीय को मेरी पैलगी पहुंचे आगे मैं यहां सब तरह से सुखी हूं और आपकी तंदुरुस्ती और सुख चाहता हूं दो सौ रुपये सहाई खिदमतगार के हाथ भेजता हूं प्रार्थना यह है कि रुपयों के पहुंचने की रसीद कृपा कीजिये माताजी मुझे आपके आशीर्वाद से यहां सब तरह की सुख चैन है परंतु रसोई दार न मिलने से खाने की बड़ी खराबी है ठाकुर खिदमतगार बुरे भले तौर से जो कुछ बनादेता है वही खा पीकर कचहरी चला जाता हूं क्या करूं कोई उपाय नहीं चलता कभी २ छुट्टी के दिन जो अपने सामने रसोई बनवाता हूं तोतरकारी दार क़लिया विशेष सुस्वाद होता है नहीं तो जली भुलसी रसोई नसीब होती है बहुधा लोगों की जबानी क़ोर्मे की बड़ाई सुनता हूं परंतु उसके पकानेकी तरकीब न जाननेके कारण उसके बनाने का सावकाश कभी नहीं होता इस

वास्ते प्रार्थना यह है कि अनुग्रह करके क़ोर्मा पकाने की तरकीब लिख भेजिये और क़लिया पकाने की तरकीब जो मुझे मालूम है लिखकर भेजता हूं अगर यह दुरुस्त हो तो बहुत अच्छा नहीं तो कृपा पूर्वक जो कोई चूक इसमें हो तो दुरुस्त करके काग़ज़ फेर भेजिये। माता जी मैं इसरीति से तरकारी दार क़लिया बनाया करता हूं कि सेर भर मांस को तीन दफ़ा पानी में धुलवा कर छटांक भर नमक, अदरक, पिसा हुआ धनियां उसमें मिलाकर रख देता हूं और पाव भर घी में कोई रत्ती भर हींग से छौंकवा देता हूं और आधी छटांक हल्दी पानी में पिसो हुई उसी घीमें भुनवाता हूं और फिर मांस मसाले समेत उसमें छोड़वा कर जरूरत बराबर पानी छुड़वा देता हूं जब पानी सूख जाता है और सेर भर तरकारी छुड़वा कर भुनवा देता हूं और पानी के पीछे से भुनवाता जाता हूं फिर आध पाव दही वा नीम्बू के रस का छींटा दिलवा कर और अच्छी तरह भुनवाता हूं जब मांस और तरकारी में घी पचने लगता है तब उसीके माफ़िक़ पानी छुड़वा कर दो एक जोश दिलवा

देता हूं तिस पीछे माषा भर लवांग, दो माषा इलायची, चार माषा काली मिरच, माषा भर केशरि कुड़वा कर थोड़ी देर तक अंगारों पर दम खाने के वास्ते रखवा देता हूं आगे देखने के सिवाय और कोई प्रार्थना नहीं है ॥ इति

पच ४२

सासु का उत्तर

दो सौ रूपयों की रसोद और क़ोरमा पकाने की तरकीब ॥

स्वस्ति श्री नेच प्रकाश राम साहय को अशीस पहुंचे तुम्हारे खाने पीने की बेबन्दोबस्ती का हाल मालूम होने से मुझे अपने खाने पीने का स्वाद नहीं मिलता भगवान तुम्हारी बेचैनी जल्द गवा वे जो मेरी तरफ़ी होवे राम चरण मिश्र को ४) रु० महीने और ख़ुराक पर राज़ी किया है जो तुम्हारी सलाह हो तो उसे तुम्हारे पास भेज दें और दो सौ रु० जो तुमने भेजेथे वे पहुंचे और जैसे के तैसे तुम्हारे घरमें देदिये गये ग्रहस्थो के काम काज में ख़र्च किये जावेंगे जमाख़ातिर रक्खो। बेटा क़लिया तरकारी पकाने की तरकीब तुमने बहुत ठीक लिखी है घी और तर कारी

के घटाने बढ़ाने का तुम्हे इख्तियार है अब क़ोरमा पकाने की तरकीब मुझ से सुनो सादा क़ोरमा पकाने की तरकीब यह है कि सेर भर मांस को बख़ूबी अच्छी तरह धोलवा कर छटांक भर नमक, पाव भर दही, छटांक भर अदरक का पानी उसे मिलवा देवे फिर पाव भर घीमें रत्ती भर हींग का छौंक देकर उसे फेक मांस दही आदि सब उस घी में भुनवावे भूनने के समय छटांक भर कुचले हुए लहसुन के पानी का छीटा दिल वाते जावे तिस पीछे थोड़ासा पानी, चार माषे काली मिरच, दो २ माषे लौंग, इलायची छुड़वा देवे जब मांस पक कर मुलायम हो जावे तब छटांक भर छिले हुए बदामों का शीरा आध पाव मलाई छनवा कर मिलवा दो फिर दो माषे केशर और चार नींबू का रस छोड़ कर अंगारों पर रखवा देवे एक साअत के पीछे उसे खावे तुम को उचित है कि जब तक मेरी आखों से दूर हो तब तक सदा अपने शुभ समाचार लिखते रहो कि दिल को खस्थता रहै ॥

पत्र ४३

पुरुष की चिट्ठी स्त्री को

अच्छी सलाह के धन्यवाद और अपने शुभ समाचार में ॥

स्वस्ति श्री परम हितकारिणी आनन्द दाइनी पतिव्रता को यथा योग्य पहुंचे, मुझे तुम्हारे दूर होने के शोच के सिवाय और कोई दुख नहीं है और तुम्हारे शुभ समाचार की प्रार्थना परमेश्वर से चाहता हूं तुम्हारी अच्छी सलाह के माफ़िक जो मैं अपने साहब के साथ यहां चला आया वह मेरे वास्ते अत्यन्त फलदायक हुआ जिसका सब ब्यौरा आदि से अन्त तक लिखता हूं साहब ने रेल घर में पहुंच कर रेल के ख़र्च के सिवाय २५ रुपये नक़द अपनी गिरह से मुझे कृपा किये और हुक्म दिया कि जब तक तुम किसी काम पर मुक़र्रर न हो तब तक २५ रुपये महीने हुज़ूर अपने पास से देंगे मैंने सलाम करके वे रुपये लेलिये और साहब के साथ रेल में बैठ लिया श्रीयुत साहब बहादुरने यहां पहुंचतेही इजलास में पेशी की मुहर्रिरी ख़ाली पाकर मुझे मुक़र्रर किया उसी अठवारे में कलक्टरी के सरिश्तह दार अपने लड़केके बिवाह में ३ महीने

की रुख़सत मांगी साहब ने चट मंज़ूर फ़रमाई और मैं कायम मुक़ाम सरिश्तेदार नियत हुआ दूसरे अठवारे में एक तहसील दारी की जगह खाली हुई साहब ने बड़ी क़दर दानी और प्रतिपालनता से मेरे नियत होने के लिये बड़ी धूम धाम की रपोर्ट की और उसे कमिश्नर साहब बहादुर ने देखतेही मंज़ूर फरमा लिया अब परमेश्वर की दयासे मैं बारह बंकी का तहसीलदार होगया हूं मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैंने साहब की आज्ञानुसार नक़्शलनबीसी की नौकरी छोड़ देने और उनके साथ यहां आने का इरादह किया था तो यह बात मेरे किसी भाई बन्धु को पसन्द न थी सब लोग यही समझाते थे कि यद्यपि नक़्शल नवीसी में बीस रु० से अधिक तुम्हें कुछ नहीं हाथ पड़ता और इस कारण तुम्हारा गुज़रान बड़ी तंगी के साथ होता है परंतु एक ठिकाने आपस में एक साथ रहना तो होता है अगर तुम्हारे प्रारब्ध में तरक्की होगी तो यहीं पर कोई युक्ति निकल आवेगी मानो तुमने यह लगी लगाई नौकरी छोड़ कर इतनी दूर जाना अपने ऊपर अंगीकार किया और वहां तुम्हारी नौकरी की

कोई राहन निकली तो परदेश में न वहां किसी से उधार मिलेगा और न यहां से तुम्हारे पास कुछ ख़र्च पहुंच सकेगा तो ऐसे हाल में घर लोट आना भी कठिन हो जायगा जब मैं तुम्हें देखता था तो सबसे ज़्यादह शोच और फिकर में पाता था जिस समय मैंने तुमसे इधर आने की बाबत मशविरह किया तो तुमने बड़े धीर्य से यही उत्तम जवाब दिया कि यद्यपि बिरह की आगि सारा बदन जलावेगी परंतु अच्छा यही है कि तुम अपने मालिक अन्नदाता के साथ सिधारो क्योंकि साहब बड़े अति पालक हैं इसके सिवाय तुम्हारे खरेपन और सत्य बाद व मेहनत और मशक़्क़त के कारण तुम्हारे साहब तुमसे इतने रज़ामन्द और ख़ुश हैं कि तुम्हें अपने साथ ले जाया चाहते हैं मेरी जान में ऐसे क़दर दान हाकिम के साथ में तुम्हें न ख़र्च की तकलीफ़ होगी न बेकार बैठा रहना पड़ेगा बल्कि तुम्हारे साथ रहने और ताबेदारी से ज़्यादह सहाय होंगे और तुमको अपना साथी जानकर बहुत शीघ्र बड़े अधिकार पर पहुंचावेंगे निश्चय करके मानो कि मेहरबान हाकिम बड़े प्रारब्ध की

प्रबलता से हाथ आता है भावार्थ यह है कि ऐसे कठिन समयमें तुम्हारी बुद्धि ठिकाने रही और बड़े धीर्य्य से दूरअंदेशी करके मेरा चला जाना गवारह किया और लोगों के मत के विरुद्ध यहां आने पर मेरा जी मजबूत किया आखिर मैं यहां आया और अच्छा फल पाया जोकि तुम्हारे उत्तम और ठीक बातों को मुझे इम्तिहान होता जाता है और जो बात तुम्हारे मुंह से निकल जाती है वह कभी पट नहीं पड़ती इस हेतु मुझे तुम्हारी चतुराई और बुद्धिमानी पर बड़ा बिश्वास है और यही कारण है जो मैं तुम्हारी सलाह और मशविरे के बिना कोई काम नहीं करता अब मेरे बिचार में आता है कि तुम्हें यहां अपने पास बुलालूं जिस्से दूरी का दुःख दूर हो और एक ठिकाने सुख से गुजरान करूं और इस बात में जो तुम्हारे नजदीक अच्छा होसो लिख भेजो कि उस्के बमोजिब बंदोबस्त किया जाय आगे शुभ ॥

पत्र ४४

स्त्री का उत्तर

टो तीन महीने अपने नबुलाये जाने के बाबत ।

सिद्धि श्री ५ सर्वोपरि प्रीत्याधिकारी उभय लोक्यके स्वामी को दासी की दण्डवत पहुंचे आप का पत्र बड़ी अवसर में आया सब दुःख दर्द दूर होगया आपकी तंदुरस्ती और अधिकार बढ़ने का हाल सुन कर अत्यन्त खुशी और दिल जमई हासिल हुई ईश्वर दिन प्रति ज्यादह लक्ष्मी प्राप्त करे मैं यह कह रुकी हूं कि मुझे जुदाई का क्लेश नहीं है परंतु हर एक मनुष्य को दुःख दर्द के समय अक्ल से बाहर कोई बात न करनी चाहिए और अपने बिपत्ति की कहानी सुनाकर दूसरे को सोच बिचार में न डालना चाहिये इस वास्ते मैं भी अपने दुख और सोच की कहानी को ताक़पर रख कर जो सोचती हूं तो यही बात मनमें आती है अभी आप वहां नए २ गए हैं इस वास्ते आपने न अभी तमाम इलाके में दौरह किया होगा और न दफ़तर को अच्छी तरह जाना होगा इसके सिवाय हर एक आदमी को अपने काम के

बराबर सब बाहरी समान भी दुरुस्त करना पड़ता है इस कारण इतने दिनों में जो कुछ तनख़ाह मिली होगी वह सब ख़र्च होगया होगा इन सब बातों से हाल साल में मुझे वहां बुलालेना वेसबब सोच और ज़रूरी मोल लेना है इस वास्ते मेरी जानमें जब आप को वहां की सब बातों से फ़ुरसत होजावे तब आप एक चिट्ठी मेरी सासु जी अर्थात् अपनी माताजीके नाम इस मनोरथ से लिख भेजें कि वे मुझे अपने साथ लेकर वहां आवें सासुजी को लिखने और उनके साथ मुझे बुलाने से दो बड़े लाभ हैं एक तो उनकी ख़ुशी होगी दूसरे परदेश में बड़ी बूढ़ी का साथ होना बज़ुत अवश्य है मेरी प्रार्थना यह है कि जब तक मैं आपसे दूर हूं तब तक अपनी तबीयत की ख़ैरख़ल्लाह और अपने साहब की मेहरबानी का हाल लिखते रहें परमेश्वर सब मनोरथ सिद्ध करें ॥

पद्य ४५

साथ पढ़ी हुई और बराबर दर्जे की स्त्री के नाम महारानी विद्याधरी के पाठ शाला के प्रबंध में ॥

स्वस्ति श्री३ मित्रवर्य्य को भेंट घाट पहुंचे प्रीति और देखने के पीछे की इच्छा ज्ञात हो बहिन मुझे बहुत दिनों से सोच था कि बहिन सुखरानी से भेंट करूं और उनकी पाठशाला देखूं और अगर उचित हो तो नेच प्रकाश मोहनी को उनको सौंपदूं मतलब की माघ की पंचमी को वहां गई जैसेही मेरी सवारी उनके द्वारपर पहुंची बहिन सुखरानी जनानी पौठ तक अगवानी के वास्ते आगे मुझे अपने साथ बारादरी में ले गई और बड़ी खुशी से मेरी महिमानी व सुश्रूषा और प्रतिष्ठा की और अपनी पाठशाला भीदिखाया एकतीस लड़कियां रजिस्टरमें अट्ठाईस हाजिर थीं पहली दफ़ामें सात लड़कियां प्रेमसागर व्याकरण की उपक्रमणिका पढ़ती हैं और छोटी २ बातों को संस्कृत भाषा और भाषा से संस्कृत में उलथा करती हैं हिसाब में दशमलव सीखती हैं मेरे प्रश्नों के उत्तर अच्छे दिये अच्छे अक्षरों के बनानेके लिये कापियां लिखती हैं

गुलाबो नामे लड़की तो फूलके सदृश है उसे जितने प्रश्न किये गये उसने सबके उत्तर सही और अच्छे दिये और सोजनका रूमाल उसके हाथका बनाया हुआ देख कर मेरे हाथ के तोते उड़गये उसका तुरंज और चारों ओर बूटे देखने के लायक़ हैं इस लड़की के हाथ के बनाये हुये करेले भी मैंने हाथ चाट २ कर खाये दूसरी दफ़ा में ७ लड़कियां हैं इस दफ़ामें भोजप्रबन्धसार, तत्वदीपिका, पचदीपिका, पढ़ाई जाती है हिसाब में भिन्न और त्रैराशिक के प्रश्न निकलवाये जाते हैं इमला लिखती हैं और ख़ुशख़ती भी लिखती हैं सीनेमें कामदानी बनवाई जाती है इस दफ़ा की लड़कियों ने भी अच्छे उत्तर दिये गोपाली कुंवरि के हाथ के बनाये कांटे और कैरियां मुझे बहुत अच्छी मालूम होती हैं तीसरी दफ़ाकी छेवों लड़कियों ने दिल बहलाव विद्यांकुर और हिसाब में मिश्रभाग लिखना और ख़ुशख़तीमें इम्तिहान अच्छा दिया इस दफ़ा की लड़कियों के हाथ की चिकन और रफू प्रसन्न के लायक़ हैं चौथी दफ़ा में तीन लड़कियां हाजिर थीं उन्होंने शिक्षावली पचहितैषिणी गणितप्रकाश पहिली में से चारों रीतों के प्रश्न

किये और उत्तर अच्छे दिये इन लड़कियों के हाथ का क़सीदा और सिया हुआ चोग़ा मुझे प्रसन्न आया पांचवीं दफ़ा में पांचो लड़कियां हाज़िर थीं अक्षरारम्भ पड़ती हैं और ह्रस्व दीर्घ का अच्छा बोध है बारह तक पहाड़े कंठ हैं एक लड़की दसलाख तक अंक लिख सक्ती है इन लड़कियों में दो लड़कियां अड्डे पर जाल भी बनाती हैं निया नामे लड़की मौनसिरी के फूल माहीपोठ अच्छा बनाती है अब पाठशाला के समय हाल सुनो सुबह के सात बजे से दस बजे तक तीन घंटे लड़कियां पढ़ती रहती हैं फिर बारह बजे तक दो घंटे पकाने और खाने पीने में रहती हैं ॥ फिर दो बजे तक अर्थात् दो घड़ी हिसाब और सफ़ाई और अक्षरों के मश्क़में लगी रहती हैं पिछले दो घंटों में हर एक तरह के हाथ के बनाने वाली वस्तुओं में जो औरतों में ज़रूरत पड़ती है मसरूफ़ रक्खी जाती हैं सिवाय पाठशाला के वक़्त के दो घंटे का काम और भी उनको बताया जाता है जिसको वे अपने घरोंसे बना लाकर दूसरे दिन शिक्षकाइनीजी को दिख: लाती हैं और अपने शऊर और मेहनत के साथ

शावाश और तारीफ़ पाती हैं विद्याधरी इस पाठशाला के शिक्षकों में बड़ी लायक़ और उदार चित्त सुशील और मेहनती है यद्यपि बाज अमीर जिनकी लड़कियां इस पाठशाला में पढ़ती हैं हजार हजार तरह से चाहती हैं कि शिक्षकाइन दो तीन सौ रुपया नक़द या कोई सोगात ले मगर वे इस बातको कभी पसंद नहीं करती हैं कि और कहती हैं मैंने जो यह ढंग अपना दिल बहलाने और अपने संगी साथियों को नफ़ा और लाभ पहुंचाने की नज़र से अख़्तियार किया है कुछ दुनिया के लालच से बखेड़ा मैंने अपने ऊपर नहीं लिया है भावार्थ यह है कि उनके बड़े दिलकी और ख़ुश नियती और पढ़ाने का उपाय देख कर मैं बहुत ख़ुश हुई और नन्हीको उन्हें सौंप दिया उसका पढ़ाना लिखाना वा ढंग रंग लगाना बड़े प्यार और दयासे उन्होंने अपने माथे लिया है बहिन इन कामों को बतलाने से मेरा यह आशय है कि अगर आप बातें नेच प्रकाश चांदरानी को पढ़ाना लिखाना चाहो तो विनती और चिरोरी करके उसको भी मैं उनको सौंप दूं आगे शुभ ॥

४६ पत्र

स्वस्तश्री मिच बर्य्या गुरबख़्स कुंवरिका मेरी भेट घाट पहुंचे देखने की प्रीति के पीछे भावार्थ हाल यह है कि आपकी चिट्ठी भेजी हुई आई सब लिखे हुये हाल से ज्ञात भई बहिन जी मैं तुम्हारा बहुत अहसान मानूंगी जो तुम चान्द-रानी को विद्याधरी जी के पास सौंप दो बहिन मैं तो उनको अच्छी तरह से जानती हूं उनके बड़े भाई मुंसरिम और डिपटी कलक्टर या तहसीलदार ससुरे में कोरट के सरबराहकार हैं उनको ईश्वर की कृपा से किसी वस्तु की कमी नहीं है जो किसी के देने लेने पर ध्यान करें और इसके सिवाय उन्होंने अपने पाठशाला का बन्दोबस्त इस खूबी और शऊर से किया है कि जिसको आपने शायद न जानने के सबब से नहीं लिखा है सुनो बहिन जी यद्यपि शिल्पकानी जी किसी से एक दमड़ी भी नहीं लेती हैं तथापि उन वस्तुओं के मोल से जो उनके पाठशाला की लड़कियां बनाती हैं पचास रुपये महीने की आ-मद है जिसमें से सात लड़कियों को दो २ रुपये का महीना मिलता है और तीन २ रुपये की दो

टहलुइयां नौकर हैं जो लड़कियों की ख़िदमत किया करती हैं और बिक्करी वाली वस्तुओं को बेचलाती हैं और माल मसाला ख़रीद कर-लाती हैं और पांच रुपये महीने की पुस्तकें मोल ली जाती हैं जो ग़रीब लड़कियों को इनाम में दी जाती हैं या पुस्तकालय में जमा होती हैं और दो रुपये माहवारी ऊपर के ख़र्च के वास्ते मुक़र्रर हैं और दोसौ सत्तर रुपये कम या अधिक जो साल भर के ख़र्च से बचे हैं उनमें से सौ रुपये पाठशाला के नाम से जमा किये जाते हैं और बाक़ी नक़द रुपये से तीन चार ग़रीब लड़कियों का बिवाह करदेती हैं बहिन जी ऐसी प्रबन्धक और गुणवान् स्त्री तो बहुत कम सुन ने में आई होंगी जिस औरत के ऊपर उनके आंचल की साया पड़ जाय वह आदमी होजाय मुझको बड़ी अभिलाषा थी कि चान्दरानी को उनको सौंपदूं परंतु मेरा और उनका कभी संगम न हुआ था न मुझको वे अच्छी तरह जानती थी इस वास्ते मुझकोकभी शक्ति न हुई कि उनको इसतरह की तकलीफ़ देती अबजो आपने कृपादृष्टि से यह बात तजवीज़ किई है तो मुझ को

अत्यन्त खुशी हुई है और तमाम उमर इस अह सान का धन्यवाद न करसकूंगी आप अवश्य करके नेत्र प्रकाशक बिद्याधरी जीके चरणारबिन्दमें सौंप दें आगे रामराम और धन्यवाद शुभ मेरी ओर से अपने सब बच्चों की बलायें लीजियेगा और आशीष कह दीजिये गा ॥

पत्र ४७

बराबर वाले को ।

स्वस्ति श्री ३ मित्र वर्य्य रहस कुंवरि को मेरी भेंट घाट पहुंचे देखने की प्रीति के पीछे ज्ञात हो कि जिसदिन से हमारी और तुम्हारी अलगताहुई तुम्हारी कोई कृपा पत्री नहीं आई इसवास्ते मेरा दिल बेचयन और शोच में रहता है बहिनि क्या तुम नहीं जानती हो कि चिट्ठी आना आधी भेंट के बराबर है, जरा सा पुरजा लिखकर अपनी कुशल क्षेम से ज्ञात न करना क्या बात है और सुनो बहिनि आज पण्डित गणेशदत्त भैया मंगलदीन की बातें सदा सुख तेवारी के यहां से लाए हैं और उनकी जाति और पांति की बड़ाई करते हैं और यह भी कहते हैं कि दहेज भी बहुत कुछ देंगे लड़की भी आंख

नाक चेहरे मुहरे रंग रूप से अच्छी है बहिनि यद्यपि यह सब कुछ हो परंतु मैंतो इन सब पदार्थों से गुणही को अच्छा समझती हूं उसको खोजती और ढूढ़ती हूं इस श्लोक के अनुसार ॥

श्लोक ॥

बरंदरिद्रम्बहुशास्त्रपाठक: नचापिमूर्खोबहुरत्नसंचय: ॥

अर्थात् बिद्या हो और चाहे धनादिक नहो और बिद्या वह धन है जैसा कि इस श्लोक से प्रसिद्ध है ॥

श्लोक ॥

नचौर्य्यचौर्य्यन्नृपतेनहार्य्यं न्नभ्रातृभागंनकरोतिभाग्म् ॥

अर्थात् इसको चोर नहीं चुरा सक्ता भाई बन्धु बाट नहीं सक्ते राजा छीन नहीं सक्ता यह धन सब धनों से अधिक है ॥

अगर कुल मूल दुरुस्त हो और आदमीपन याने मनुष्य के आचरण नहीं तो वह कुछ नहीं है रहा धन दौलत चलती फिरती परछाहीं है बाक़ी रही सूरत शकल वह भी बिना नेक वस्त्रो के ऐसी है जैसे बेस्वाद का भोजन स्वाद नहीं हां अगर यह सब खूबियां बिद्या हुनर शील मिलन सारी नेक वस्त्रो लाज आदि अच्छी २ बातें जमा

होंतो वाह २ फिर क्या कहना बड़ीबात है नहीं तो नेक चाल और मिलनसारी जिसके कारण पशु और मनुष्य में फ़र्क़ है सब वस्तुओं में अवश्य है इस वास्ते मैं तुमको अपना जानकर लिखती हूं कि तुम कृपा पूर्वक वहां के समाचार मुझे लिख भेजा और सुनासिब जानो तो इस बात के दृढ़ करने में श्रम और ध्यान धरो आगे क्या तकलीफ़ दूं ॥

उत्तर पत्र ४८

स्वस्ति श्री३ मिच तुल्या बहिनि सुखरानी को मेरी भेट घाट देखने की प्रीति के पीछे ज्ञात हो कि चिट्ठी तुम्हारीलिखी हुई आई सबहाल ज्ञात हुआ भला बहिनि तुमने कौनसी चिट्ठी लिखी जिसका उत्तर मैंने न लिखा अबलो भली सुधि आई मेरी तो दो चिट्ठी तुमपर फाजिल हैं एक माघ बदी ११ की सूखा टहलुई के हाथ भेजी फिर भोगा के हाथ फालगुन बदी ५ को दूसरी चिट्ठी भेजी गई कहो पहुंची फिर तुमने कब और किसके हाथ इस चिट्ठियों के जवाब भेजेअब एक मुद्दत के पीछे जो एक चिट्ठी आपने लिखी

है उस्में सेत मेत उलटा गिल्ला शिकवा भर दिया है सुनों बहिनि तुम मुझको चिट्ठी लिखो या न लिखो मुझे तुमसे सच्ची प्रीति और मिचता है इस वास्ते तुम्हारी खैर सल्लाह सूखा बारिनि से पूछ लिया करती हूं और सुनों बहिनि मेरे प्यारे भानजे रामदुलारे की बात चीत रुक्मिणि के साथ ठहरी है उस्का क्या कहना है ईश्वर सिद्ध करै रुक्मिणि लड़की क्या है मानो रत्न है लो बहिनि देखो मेरी बुद्धिपर क्या पत्थर पड़े हैं कहां यह उत्तम मनुष्य और कहांबह रत्न धातुका टुकरा आपके प्यारों की सौगंध अगर इन्द्र की परी कहो तो ठीक है यह बात अच्छी से अच्छी है यह लड़की मैं अपनी देखी हुई कहती हूं कहा मानना धर्मवान तरह देना मिलाप अच्छे रूप बिद्यावान और हुनर इन सब में ध्यान के सिवाय और और नजर नहीं करती है ॥

---

४९ पत्र

तथा चिट्ठी के न भेजने का गिल्ला ।

स्वस्ति श्री३ बहिनि राधा को मेरी भेट घाट

पहुंचे बहिन क्या कोई क़ानून छप गया है कि जो कोई आदमी गांव से उठकर शहर में जा रहै वह अपने हम जोलियों और साथ पढ़ी हुई गुरूबहनों से प्रीति का डोरा तोड़ डाले पत्री लिखना बन्द करैं अगर छप गया है तो लाचार हूं नहीं तो मेरी चार चिट्ठियोंके जवाब न लिखने से कब बच सक्ती हो बहिन क्या तुम नहीं जानती हो कि मुझको तुमसे कितनी प्रीति है ईश्वर जाने जब तक तुम्हारा हाल नहीं मिलता है मेरे दिलपर क्या २ बीतती है और तुम्हारा यह हाल है कि खुशी आनन्द के दो अक्षर तक लिखना दुर्लभ है कसम ईश्वर की सुस्ती और सहलंकारी छोड़दो मेरी चिट्ठियों के उत्तर लिखो और हां बहिनि जबसे नेच बिन्दु राम दुलारी के रामायण समाप्त होने की मिठाई खाई तब से उसके लिखने पढ़ने का कुछ हाल नहीं पाया है अबतो राम की कृपा से और तीन चार भाषा की पुस्तकें पढ़चुकी होगी एक गृहोपक्रमणि का भेजती हूं यह पुस्तक अनमोल है गृहस्थी के वास्ते है मेरी ओर से उसकी बलायें लेना और यह पुस्तक देदेना अगर वह मेरे इस सौगातकी

प्रतिष्ठा करैगी और इस पुस्तक को दिल लगा कर पढ़ेगी तो मैं उसके वास्ते एक गुलबदन का थान इनाम में भेजूंगी गुलाबा के वास्ते एक ओढ़नी भेजती हूं इस समय गोट का कपड़ा मौजूद नथा इस वास्ते दो रुपये गोट के लिये साथ करदिये हैं लाल अतलस मंगाकर गोट लगा देना इस मलमल की धानी ओढ़नी में जान पड़ जायगी यह ओढ़नी मेरी ओर से उसको देदेना और अशीष कहना और अपना शुभ समाचार लिखना आगे मिलने के प्रीति के सिवा क्या लिखू

---

५ ०पच

उत्तर चिट्ठी न भेजने का बहाना ॥

और किताब और ओढ़नी की रसीद ॥

स्वस्तिश्री ३ बहिन रामदुलारी को भेंट घाट पहुंचे मिलने की प्रीति के पीछे सुनो कि तुम्हारा छपा पच सब वस्तुओं समेत नन्दो टहलुई के हाथ पहुंचा उसके देखने और पढ़ने से आखों को सुख और कलेजे को ठंढक पहुंची तुम्हारा गिल्ला शिकवा मेरे शिर आखों पर है बहिन यह भी कोई बात है कि मेरे दिल से तुम्हारी प्रीति जाती रहे

और तुम्हारी चिट्ठियों के जवाब भेजने में आना कानी करूं परंतु क्या कहूं कि दुर्भग इस दुनियां के भरमजाल और घरबार के धन्धों से दिन भर छुट्टी नहीं पाती हूं आदमियत से गुज़र गई हूं अब जो तुम मुझे देखो तो मुश्किल से चीन्हो बहिन क्या बयान करूं जिस दिनसे सासुजी स्वर्ग बास हुईं पति देवर लौंड़ी नौकर गाय बकरी सारे घर बार का धन्धा और ख़बरदारी मेरेही अकेली भुनगा सी जान पर आन पड़ी है खिद-मतगार टहलुई ऐसे कज़्ज़ाक हैं आंख नीचे भई कि चीज़ गायब करलो जिस ओर देखती हूं खराबी ही नज़र आती है पुराने और क़दीम लोग हैं इनको न कुछ कह सक्ती हूं न निकाल दे सक्ती हूं एक ग़ज़ब में जान फसी हुई है हर बात पर अपना मूड़ पीट पीट कर रह जाती हूं लड़कियां पढ़ने लिखने में लगी रहती हैं इस बिचार से कि उनको गृहस्थो के काम धन्धे बखेड़े में लगाये रहूं तो ऐसा न होइ जाय कि पढ़ने लिखने की ओर से इनका जी उचाट न होजाय घर बार के कामों की ओर नहीं लगने देती हूं हर तरह धन्यही धन्य है हां इस समय एक

हंसी की बात सुनिये कि रामदुलारी ने ओढ़नी ओढ़ कर रूपनिको ताना दिया कि देखो हमारी मौसीजी ने हमको अच्छी २ ओढ़नी भेजी तुमको क्या भेजा एक छोटीसी पुस्तक वह बोली वाह बहिन हमारी मौसीजीने हमको बहुत अच्छी चीज भेजी है जिसके पढ़नेसे हमको बुद्धि आवेगी तुम्हारी ओढ़नी चार दिन में मैली कुचैली होकर टुकड़े २ हो जावेगी और बहिन मैंतो गुलबदन के बदले में जिसको भेजने का मेरी मौसी ने वादा किया है कोई अच्छी सी पुस्तक मांगूंगी बहिन ईश्वर की कृपा से मेरी रूपनि की बुद्धि बहुत अच्छी है और खूब २ ध्यान कर लिखती पढ़ती है चार किताबें नागरी की पढ़ चुकी है उसकी शक्ति और अच्छे २ हर्फ का हाल उसके लिखे हुए पत्र से जो इस चिट्ठी के साथ है आपको मालूम हो जायगा आगे मिलने की प्रीतिके अधिक क्या बिनय करूं ॥

पत्र ५१

जवाब घरकी गृहस्थी में बहिन रामदुलारी तुम्हारी भेजी हुई चिट्ठी आई तुम्हारी रामकहानी

से मेरा जी बहुत घबराया है बहिन तुम बुद्धि-
मान होकर जिस घरमें हो उस घर का ऐसा
बुरा लेखा क्यौं हो बहिन होशमें आओ इसके क्या
माने कि तुम्हारे नौकर चाकर टहलुई खिदमत
गार खुद तुम्हारे ही आज्ञा और ताबेदारी में
नहीं बहिन मेरा कहना माफ़ करो इसबात से
तो तुम्हारी बुद्धि में भ्रम होता है ईश्वरने मनुष्य
को बुद्धि समझ मिलनसारी शीलदानि पुण्य क्षमा
ग़मख़ोरी दया क्रोध प्रबन्धन्याय आदि सब
तरह की ख़ूबियां दीहैं परंतु मनुष्य को चाहिए
इन अच्छी बुद्धि को आगे गमन करके अपने २
समय और आवश्यकतापर काम में लावें जैसे
खीर पकानी होतो दूध के अन्दाज़ के माफ़िक
शकर चावल छोड़ने पड़े जो अगर इनमें से
कोई चीज़ घट या बढ़ जावे या उसके ताव भाव
में फ़रक़ पड़े तो वह खीर स्वादित होगी अगर
कहीं ग़लती से शकर की जगह पर नमक छोड़
दिया जावे तो वह और भी बेस्वाद हो जावेगी
इसी तरह जो कोई क़ौरमा बनाना चाहै तो
मांस के मवाफ़िक घी मसाला आदि छोड़ना
पड़ेगा अगर उसमें से कोई चीज़ कम या अधिक

हो जायगी तो उसी न्यूनाधिक से अवाधिक सुख-सार प्रगट हो जायगा फिर अगर कोई दे समझे नमक की जगह शक्कर डालदे तो वह और भी बेस्वाद और खराब हो जायगी वहिन मैंने यहां दया को शक्कर और क्रोध को नमक मान लिया है अर्थात् जिस तरह नमक खानेमें थोड़ा अगर जरूरत से कम होगा तो खीरका फीका रहेगा जो अधिक हो जायगा तो कड़ुआ जहर हो जायगा इसी तरह जो क्रोध सलाह से कम हो तो नौकर ढीठ हो जायगा और अगर अधिक होगा तो आग हो जावेगा--इसी तरह अगर दया की जगह क्रोध और क्रोध की जगह पर दया क्षमा हो जायगी तो और बहुतसी बुराइयां उत्पन्न हो जावेंगी वहिन इन बकवादों से मेरा यह मतलब है कि पहिले तुम पर एक विद्वान गार की बुद्धि जांचो फिर जिसको जिस काम के लायक देखो वह उसी सुपुर्द करदो जिसे वह उस काम का जवाब देने वाला और जिम्मे-दार रहे जोई नौकर अपने काम में ढील या सुस्ती करे तो पहिलेवार आंख छिपाव जाय फिर समझाओ इसके बाद धमका घुड़क करो और

में जुरमाना या सजा फिर न माने तो छुड़ा दो जो किसी तरह न सुधरे तो शास्त्र के अनुसार से बुरे पेड़ को जड़ से उखाड़ डालो जब एक दो आदमी अपना किया भर पावेंगे तो औरों को भी ज्ञान हो जायगा और सारे काम तुम्हारी मरजी के मुताबिक होंगे और कहिये यह भी जानो कि जो मनुष्य न्याय और खैरख्वाही के साथ अपना काम करे तो औरों की अपेक्षा उसकी माया और प्रीति अधिक करनी चाहिये जिससे उसके भी मनमें खैरख्वाही का जल जान पड़े और सुनो कहिये घरके खर्चका हिसाब किताब का काम अपनी पेशदस्ती की तरह खुदही से लिया करो दूसरे दो लाभ हैं एक तो घरके प्रबंध में तुमको सहल पड़ जावेगा दूसरे घरके लोगों में उसको ठग और बेजर हो जावेगा जब थोड़े दिन में तुम्हारे मन के माफिक प्रबंध हो जायगा तुमको सिवाय हिसाब किताब में दस्तखत कर देने और मामूली निगाह रखने के सब तरह से फरागत मिल जायगी आगे सिवाय देखने के क्या तुम ॥

पद्य ५२

उमा धन्यवाद और बंदोबस्त घरके बन्दोबस्त के बाबत ॥

बहिनि रामदुलारी को भेंट घाट पहुंचे जब तक गंगा यमुना में पानी रहै तुम जीती रहो पच तुम्हारा क्या आया जाना रसोइनि को छूटी थी मैंने तुम्हारे कहने के माफ़िक झटपट घरका बन्दोबस्त करदिया रुपिये पैसे और कोठों की कुंजियां रूपनि के हाथ में सौंप दिये और कह दिया कि दिन भरके खर्च का हिसाब रातको मुझे समझा दिया करो और जो जिस बाजार से आया करे ॥ उसको मये तिथि मिती और जान लिख लिया करो और भण्डारे की कोठरी खोलकर हर एक वस्तु अपने आगे तुलवा कर कोठरी में बन्द कर दिया करो और लिख भी लिया करो जिसमें हर एक वस्तु की कमी वा बेशी जान पड़ती रहे रसोई बनाना सूर्य्य मिसपिर रानी के हाथ कर दिया और रूपवती को उसकी मदद के वास्ते कायमकर दिया तोसक खाने की सब चीज़ों लिख कर रामनि को सौंप दिया और कह दिया कि अर्घा का बदलना और धोबी से कपड़ों का लेना वा देना भी तुम्हारे ऊपर है पानी भरने मकान बहारने और

बरतनधोने और मांजने पर परानी को सौंप दिया है बाजार से सौदा सुलुफ भाग मागना सब दिन से लाया करती थी एक दिन का हाल सुनो एक रुपिये की तीन सेर सुपारी लाई और दूसरी औरत ने चार सेर के भाव से लाई फिर कत्था ढाई सेर के भाव से लाई और गोपाल तीन सेर के भाव से लाया इस तरह खोच करने और जांचने के पीछे जान पड़ा कि बे हर एक सौदा के पीछे दस्तूरी लेती है यद्यपि कि मैने उनको समझा दिया और फिर खफ़ाऊई और जुरमाना किया पर उसने न माना अपनी आगे ले हथचलाकी न छोड़ी आखिर में लाचार होकर उसका हिसाब कर दिया और उनकी जगह पर सत्य वती मिसिराइनि अर्थात् यथा नामा तथा गुण है नौकर कर लिया और अबतो बहिन मुझे सिवाय गिलोरियां बनाने और हिसाब समझने के कोई काम नहीं करना पड़ता हां जो कभी २ कोई चीज पकवानी होती है तो रसोई घर में जाकर अपने आगे बनवा लेती हूं अब तो लौंडियां बांदियां अपने पहिले ढंग पर नहीं पकवाती हैं अपना अपना काम जल्द

करके हंसी खुशी बैठती है और बातें बनाया करती है अब न किसी तरह का मेरा दर्जा है। मैं घाता है अब उनके साथ मुझको बंकमाका करना पड़ता है अब तो मैं सावधान से रहती हूं और तुम्हारे दुश्मनों का चार की बड़ाई किया करती हूं एक बात जानदानी अपने प्यारे मालिक के रामचरण के अंगरेजी में बाबू और एक चिट्ठी के वास्ते मलमल मैं प्रकाश रामदुलारी के दुपट्टे के बीच में भेजती हूं मेरी ओर से उनको दे दीजिएगा और पढ़ा लीजियेगा अधिक क्या तकलीफ़ दी जाये ॥

पत्र ५३

मालकिनि की चिट्ठी प्रतिष्ठनीय बड़े नौकर के नाम ॥

स्वस्ति श्री सभाधिकारिणी शुभ चिन्तनीया कल्याणी जी को आशीष पहुंचे प्रगट हो कि तुम १५ दिन की छुट्टी लेकर घर गई थी आज २२ दिन बीते और तुम अपने काम पर हाजिर नहीं हुई इतनी बात से हम को प्रसन्न नहीं है दूसरे सिवाय जोड़ा जो व्यौत करके अपने साथ लेगई थी और एक अठवाड़े में बनवाकर भेज देने को कहगई थीं यह भी पूरा न हुआ इस वास्ते

तुमको लिखा जाता है कि जल्द हाजिर हो और यह जोड़ा भी अपने साथ लेती आओ आगे क्या लिखा जाय ॥

पद्य ५४

तुलसी के उत्तर में पत्नी ॥

सिद्धि श्री ऐ होन दयाल अमल्ह दाता सानिध्य रहो सत्य आधीन १५ दिन की छुट्टी लेकर यहां आई थी परंतु आनेके दूसरे दिन मुझे ज्वरकाली बीमारी होगई तीन दिन के सुधि बुद्धि जो रहित बिना जीव की तरह पड़ी रही चौथे दिन जब हवा दारू से चेत हुआ और कुछ भूख मालुम हुई तो डाक्टर साहिब ने किसी तरह दो तुरंज का रस देने की आज्ञा दी फिर पाव भर हलवा मांस की एखनी का पानी मिलने लगा अठवारे के पीछे उठने बैठने की शक्ति भई और आपकी कृपा से जिन्दी में गिनी गई परंतु पहिले का बूत कहां है अभी तक आखों में तेवर आते हैं चलने फिरने में पाव लड़ खड़ाते हैं यह बीमारी किसी को न हो दुखदा दुनियां से मुह काला हो इसने तो मुझे

जीते जला दिया दुनियां के काम से खोदिया परंतु डाक्टर साहिब को ईश्वर तन्दुरुस्त रक्खे जिन्हों ने मेरी जिन्द गानी दो थी युत मेरी पांच छः दिन से वह जोड़ा सीना शुरू कर दिया है दुपट्टे में गोट चुटकी बनत गोखरू छड़ियां पांचल पल्लव टांक चुकी हूं स्त्रियों के दोनों कपड़े और लहंगे में सिरफ किरन और छड़ियां टकाना बाकी है श्री महारानी के प्रताप से सूक तक जोड़ा भी तैयार हो जायगा और मेरे हाथ पांव में कुछ और भी बल हो जायगा ईश्वर ने चाहा तो हाजिर हो कर महारानी के चरण देखूंगी और वह जोड़ा भी चरणारविन्द में लेती आऊंगी आगे विनय ॥

—

५५ पत्र

प्रतिष्ठिता नौकर के नाम ॥

स्वस्ति श्री सेवा धिकारिणी चेतनि कुंवी वरदारिणि सुखी रहो सुनागाया है कितुम अपने काम की देख भाल खबर दारी अच्छी तरह नहीं करती हो दुशालों और रूमालों में कीड़ों ने चाट २ कर छेद करदिये हैं अतलस ताफ्ता

बाफ्तह किमुखाप गुलबदन गिरंट सासनलेट के पायजामों की रंगतें धूमिलि होगईं और गोटा पट्टा बनात गोखरू आदि बस्तु संबिया कर खाकस्याह होगये हैं तुमको धूप देखाना कभी नसीब नहीं होता है ऐसी सुस्ती तुम्हारे हक में अच्छी नहीं है चाहिये कि होशियारी और ढंग से अपना काम करो कमसे कम महीने भरमें दो दफा पशमीना को घाम देकर नीब बेद की सूखी पत्ती कलोंजी तहों में रख दिया करो और खोल कर कपड़ों को धूपमें फैला दिया करो जिसें धूप खाजाया करै और रंगमें फर्क न पड़े फिर छांहमें रख कर गर्मी दूर होजाने के पीछे फिर तह करके संदूकों में रख दिया करो अगर इसी तरह करो तो अच्छा नहीं तो हमको कुछ और युक्ति करनी पड़ेगी खबरदारी करना शरत है आगे सिवाय ताकीद के क्या लिखा जाय ॥

पत्र ५६

अर्जी जबाबी पत्र ।

सिद्धि श्री ६ महारानी न्यायाधीशा को दण्डवत दासी हक्क से ज्ञात हुई इस पुरानी अधीना

की ख़ैरख़ाही और तत्परी पर महारानी जीको अच्छी तरह से प्रगट है कि सरकारी चीज को अपने जीके बराबर प्यार रखती हूं उसकी रखवारी और ख़बरदारी से कभी ढील नहीं होती हूं और क्योंकर ढील कर सक्ती हूं जिसकी बदौलत आधसेर आटा खाती हूं और अपने बराबर वालों में प्रतिष्ठा है यह बात कैसे होसक्ती है कि उसके करने में आना कानी करे मुझ ख़ैरख़ाह दरीना की निसबत महारानी इस तरह का सोच न फरमावें अलबत्ता ठकुराइनि जीकी लप झप मेरे सामने नहीं चलती है इस कारण से वे मुझसे ख़ार खाती हैं और मेरी आबरू के पीछे पड़ी हैं अजब नहीं है कि यह जालका पुतला बनाकर उन्हींने खड़ा कर दिया हो इस समय आधीना अपनी बे क़सूरी और महारानी जी के इंसाफ के भरोसे पर दुष्टात्मा का डर नहीं रखती है प्रार्थना यह है कि एक दिन महारानी खुद आकर कोठी का जायज़ह लेलेवें अगर किसी तरह की निमक हरामी पाई जाय तो जैसा समझ में आवे तदारुक फरमावें और जो बेक़सूर निकले तो इसके सिवाय क्या निवेदन

करूं कि चुग़ल ख़ोर के मुहमें शक्कर और घी भरवा दें ॥

---

५७ पत्र

छोटे नौकर के नाम ॥

सेवकी बारिन को ज्ञात हो कि इन दिनों हम को एक बारिन नौकर रखना मंजूर है दोनो जून ख़ुराक और एक रूपिये माहवारी मिलेगा यातो अढ़ाई रूपिये बिला ख़ुराक माह माह मिलेंगे अगर तुमको नौकरी करना मंजूर होतो वैसा कहला भेजो अगले महीने में पहिली तारीख़ को हाजिर होकर अपने काममें तत्पर हो और यह भी जानो कि तुमको दस्तूर माफ़िक दश रूपिये की जामिनी लिखा देनी पड़ेगी माघ बदी १० संवत् १९२९ ॥

---

५८ पत्र

उत्तर अर्जी ॥

सिद्धिश्री ६ महारानी जी रक्षपालनीय अन्न दाता सब दिन सदा सुखी रहो माघ बदी ५ के लिखे हुए हुक्म के माफ़िक प्रार्थना यह है कि

दासी को तो हमेशह सब दिनोंसे इच्छा है कि अपनी इस थोड़ी दिनों की अवस्था को महारानीही की चरणारविन्द में व्यतीत करूं परंतु अपने खोटे कर्म से दूर रही अब जो लौंडी याद फ़रमाई गई है तो उसी दिन सर आखों के बल हाज़िर होगी सिर्फ इस काम का आधीना को अलबत्ता अचम्भा है कि महारानी ने ज़ामिनी तलब किया है क्योंकि महारानी अच्छी तरह जानती हैं कि आधीना दश वर्ष जगत रानी बहू आप की मौसी के यहां नौकर रहीहूं फिर उन से कह कर राधा कुंवरि आप की बड़ी बहिन ने मुझे अपने पास रख लिया पांच वर्ष तक वहां रही न कभी किसी तरह का इलजाम न चोरी चकारी का कलंक लगा महारानी की आज्ञा होगी सो लौंड़ी उसके मवाफ़िक करेगी वाजिब जान के बिनय किया ॥ सूर्य्यरूपी यश और भाग्य विराजमान रहे ॥

इति





